आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 4 | अंक 01 | उदयपुर मंगलवार 15 जनवरी 2019 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

डमरू से बजते समय की जीवनधारा

समय को डमरू की उपमा दी गई है। डमरू का मध्य भाग पतला और शेष दो भाग समान होते हैं। समय का भी वर्तमान क्षण अत्यंत नाजुक है। शेष दो भाग भूत और भविष्य समान होते हैं। जिसकी वर्तमान पर पकड़ मजबूत होती है वह जब डमरू की तरह समय को हाथ में लेकर बजाता उससे भूत और भविष्य दोनों बजने लगते हैं।

-रामनारायण उपाध्याय-

पहले गांव की चौपाल पर कुछ खटियाएं बिछाकर आमने-सामने चर्चाएं होती थीं। चर्चा किसी भी विषय पर मुक्त मन से कुर्सी पर बैठकर की जाती है या खटिया पर आमने-सामने की जाती है या लिखकर ; ये सारे प्रश्न गौण हैं।

मूल प्रश्न है बदलते हुए परिवेश में लोककलाओं के भविष्य का सवाल। यह नहीं है कि आदिवासी बुशर्ट या पेन्ट पहनता है या लंगोटी लगाता है। वो अपनी प्रेयसी को प्लास्टिक की कंघी देता है या मोतियों की माला ; जब तक उसमें प्यार का रिश्ता कायम है अपने ढंग से जीने की जिजीविषा है, तब तक कोई सा भी माध्यम उसे अपनी जीवन्त संस्कृति से जुदा नहीं कर सकता। उसमें समय के साथ अपने आपको बदलने की क्षमता है। इसके बावजूद भी वह अपने जीवनमूल्यों के प्रति सजग है।

लोकसंस्कृति का जन्म लोक की अदृश्य जीवनधारा से हुआ है। वह नदी की तरह अपने मार्ग में आने वाली कठिनाइयों के पर्वतों को काटकर भी आगे बढ़ी है और सुविधाओं के पुल को भी पार कर अपने पांव चल समुन्दर से जा मिली है। उसके संघर्षों में से कंकर को शंकर बनाने की क्षमता है। ऊंचाइयों पर से छलांग लगाने के स्थान को सुरम्य दर्शनीय जलप्रताप में बदलने की सूझ है। कहीं पतन भी सुन्दर हुआ है लेकिन सतत् प्रवहमान नदी का पर्वत की चोटी से धरती की बेटी को चूमने का दृश्य किसका मन लुभा न लेगा। यह इसलिए कि नदी ने अपने उद्गम से जुड़कर ही समुद्र में जा मिलने की शक्ति पाई है। अपने उद्गम से कटकर न तो वर्तमान की प्यास बुझाई जा सकती है और न भविष्य से हाथ मिलाया जा सकता है। लोकसंस्कृति इसलिए जीवन्त रही है कि वह भूत से प्रेरणा लेकर वर्तमान में मजबूती से अपने पांव टिकाकर भविष्य की ओर बढ़ने की अदम्य लालसा रखती है।

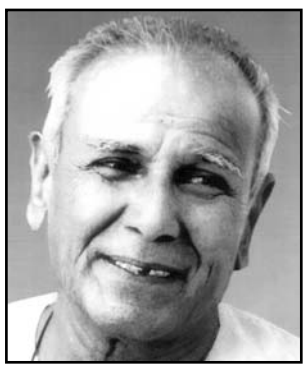

समय को डमरू की उपमा दी गई है। डमरू का मध्य भाग पतला और शेष दो भाग समान होते हैं। समय का भी वर्तमान क्षण अत्यंत नाजुक है। शेष दो भाग भूत और भविष्य समान होते हैं। अतएव जिसकी वर्तमान पर पकड़ मजबूत होती है वह जब डमरू की तरह समय को हाथ में लेकर बजाता है, तो उससे भूत और भविष्य दोनों बजने लगते हैं। जो बीच धरती से गहराई से जुड़ा होता है उसे अंकुरित पल्लवित और पुष्पित होने से कौन रोक सकता है? चिन्तनीय तो वह अभिजात्य वर्ग है जो अपनी जमीन से कटकर वर्तमान की भोगवादी संस्कृति को ही अपना जीवनमूल्य समझ रहा है।

लोक की संस्कृति लोक के शताब्दियों के अनुभव, रहन-सहन, हास-उल्लास, दुख-व्यथा, रीति-रिवाज, विश्वास और मान्यताएं तथा गीत और कलाओं से आगे बढ़ती आई है। उनमें जो अनावश्यक हैं वह पुराने पत्ते की तरह अपनेआप झड़ जाता है और नये पल्लव उगते आए हैं। राजा रघु के समय गन्ने के खेत में काम करने वाली स्त्रियां रघुवंश की कीर्ति के जो गीत गाती थीं उसी से प्रेरणा लेकर वाल्मीकि की रामकथा आगे बढ़ी है। प्रकृति रचना के सम्बन्ध में ऋग्वेद में जो कल्पनाएं संजोई गई हैं, उनका प्रेरणा स्रोत आदिम लोककथाएं रही हैं।

मनुष्य का जीवन गीतों में से जन्म लेता, गीतों में तैरता और गीतों में ही समाता आया है। गीत श्रम को हल्का करने में अपना योगदान देते आये हैं। एक किसान जब खेत में हल चलाता है तो गीत के साथ। मजदूर सड़क पर गिट्टी कूटता है तो गीत के साथ। स्त्रियां चक्की चलाती हैं या दही बिलौती हैं तो उनके साथ गीत की कुछ कड़िया भी बिलौती आई हैं। आप कालिदास के किताबी श्रृंगार पर मुग्ध होंगे लेकिन कभी देखा है, बड़ी भोर में उठकर चक्की चलाने वाली महिला को गीत की कड़ियों पर चक्की का मूंठ पकड़कर जब उसका हाथ धूमता है तो उसमें उसके थिरकते अंग-सौष्ठव को देखकर कौनसा कालिदास मुग्ध नहीं हो जाता होगा?

कोई भी कलाकृति सुन्दर नहीं होती जब तक उसका श्रम में से जन्म न हो। हल चलाते किसान, कुदाली चलाते मजदूर और नाव खेते मल्लाह सुन्दर कलाकृतियों के जनक रहे हैं। आदिकाल का आदिमानव जब वर्षा की ऋतु में किन्हीं पर्वत-गुफाओं में घिर गया होगा, तो उसने अपने जीवन में देखे चित्रों को गुफा-चित्रों के रूप में संजो लिया होगा। गीत की तरह ये चित्र भी मनुष्य के निराश क्षणों को आनंद में बदल देने की क्षमता रखते हैं। प्यास तो प्लास्टिक से बने गिलास से पानी पीकर भी बुझाई जा सकती है लेकिन पानी पीने का पात्र भले ही वह मिट्टी, लकड़ी या धातु से बना हो यदि सुन्दर कलात्मक स्वरूप लिये हो तो उससे मन की भी प्यास बुझती है।

गांधीजी ने एकबार मीरा बहन 'मिस स्लेड' की झोंपड़ी को देखकर कहा था कि तुम्हारी झोंपड़ी एक सुन्दर काव्य है क्योंकि यह तुम्हारे सुन्दर हाथ से बनाई गई है। जहां पसीने का संस्पर्श होता है, वहीं निर्मल ओस की बूंद की तरह जिन्दगी मुस्कराती आई है।

लोककलाएं अब बच्चों को सुनाने वाली परी की कहानी से आगे बढ़कर शोषणकारी व्यवस्था के खिलाफ अपने पांव जमाने लगी हैं। एक कथा में महज तीन वाक्यों के माध्यम से समूची व्यवस्था को इस तरह उधेड़कर रख दिया है इसका आनन्द भी लीजिये। कथा के बोल हैं- 'शेर ने बकरी से पूछा' क्यों री बकरी मांस खायेगी, बकरी ने कहा कि मेरा ही बच जाए तो बहुत है। अब बकरी के मांस पर पलने वाला शेर बकरी से मांस खाने की बात कर रहा है।

लोककला की दुकानदारी करने वाला वर्ग आज लोककला के संरक्षण की बात उठा रहा है। लोककलाओं का सिर्फ इतना ही कहना है कि करने के लिए आपके पास से बहुत से काम हैं, भगवान के नाम पर हमारा उद्धार मत कीजिये, हम अपना उद्धार आप कर लेंगी।

दो सौ वर्ष पुराना प्रेमपत्र

प्रेम को अनेक रूपों में वर्णित किया गया है। हमारे यहां लोकजीवन में कई वर्णन ऐसे हैं जिनमें विरहिणियों ने अपने प्रियतम को सन्देश भेजने के लिए सन्देश वाहक के रूप में पक्षियों को पाला है। इनमें हंस, मोर, तोता, कबूतर, सारस तथा सोन चिरैया का उल्लेख मिलता है। रेगिस्तानी इलाकों में गोडावण की मान मनुहार की गई है। उसके पांवों में घुघरियां पहनाने तथा चोंच को सोने से मंढवाने का बड़ा ही मनभावन वर्णन मिलता है। उसकी पांखों पर सोभते रंग का सन्देश लिखा जाता था। विरह का जो वर्णन गीतों के माध्यम से उकेरा जाता वह कल्पना से परे मिलता है। ऐसी प्रेम-गाथाएं तथा प्रेमी भी हुए जिन्होंने सबकुछ न्यौछावर कर दिया। उन्हें आदर्श प्रेमी के रूप में स्वीकारा गया है। ढोला-मारू, लैला-मजनू, मूमल-महेन्द्र, हीर-रांझा के नाम आदर्श प्रमियों के रूप में मिथक बने हुए हैं। प्रेम की पराकाष्ठा नारी हृदय में ही अधिक मिलती है। बीकानेर में अध्ययन के दौरान उदय नागौरी ने 25 फरवरी 1960 को मुझे एक ऐसा रूक्का बताया जिस पर एक प्रेमपत्र लिखा हुआ था। इस पर लेखन तिथि का उल्लेख तो नहीं था पर कागज को देखते हुए वह दो सौ वर्ष पुराना लग रहा था। यह पत्र एक प्यारीजी द्वारा अपने साहबजी को लिखा गया था। पत्र नागोर से लिखा गया था। इसका प्रारम्भ गद्य में था। उसमें अपने प्रीतम को कई उपमाओं से भूषित किया गया था और अन्त में सात दोहे लिखे गये थे। पूरे पत्र का मजमून इस प्रकार है-

।। श्री।।

स्वस्त श्री नागोर सूभ सुथानेक, सरब उपमां, अनेक उपमां, बड़ी-बड़ी उपमां लायक, सूरज जिसो तेज, चांदा जेड़ा निरमला, सेना रा सूर, डोडा जेहा सुगढ़, चवदा विद्या निधान, चौंसठ कला मांहे परवीण, बढ़ती वेल, आंख्यां री जोत, जीव री जड़ी, प्रीतम प्राण आधार, राजसभा सिणगार, दुखिया रा दुख भंजणहार, कानां री कुंडल अर हिवड़ा रा हार। सरव आवरण रा सिणगार, मोती सरीसा ऊजला, मूंगा जेहा लाल, चूनीया जेहा रंग, गुलाब रा फूल, चम्पा, केवड़ा जेहा सुवास, लूण जेहा चरचरा, कामदेव रा अवतार, माथा रा मोड़, प्रेम पावन वाड़ी रा फूल, समंदर री लहर, बुद्धि रा निधांन, इन्दर जिसो रूप।

साहबजी री उपमां कित्ती लिखूं-बखाण लिखिया कम जाणिये, गुणा रा गाड़ा, फोजां रा लाड़ा, चम्पावाड़ी, गुल हजारी रा फूल।। श्री साहबजी श्री श्री 19 श्री श्री कंवरजी साहब चरण कमलाय नूं लिखावतू प्यारीजी रो मुजरो बंचावसी व मुजरो मालम होसी और चिरजीवो घणा बरस अधीर जो जी, सूरज जिम तपजो, वड़लु जिम विसतर जो जी, चोखी पोर पाणी आरोगजो, जतन जावतो रखावजो, जतन तो भगवान करसी, पिण प्यारी ने लिखियो चाहिजे।।

अठारा समाचार भलाछै, आपरा सदा आरोग चाहिजे। कंवरजी राठीला रा घणा जतन करावसी जी, सारी मूदार डीलां री जतन तो परमेसर जी करसी जी-

।। दूहा।।

सजन हम तुम बीछड़ी, बोल उठी तन पीर।
आठ पोर चौंसठ घड़ी, नैणा बरसत नीर।। 1।।
सजन फलज्यो फूलज्यो, बड़ जिम विस्तरज्यो।
मासे वरसे जो मिलो, तो इण रंग रहीज्यो।। 2।।
सजन तो तेहीज भला, घर पासइं घर होय।
अंग मिलावो देख गति, नयण मिलावो होय।। 3।।
अगर तणइ अहिनांण, पीडंतां परिमल करइ।
ते साजन संसार, जोया पिण जुड़िया नहीं।। 4।।
हीया हेज बिणास, कूड़ो विसन वसावियो।
लोही चढ़ै न मांस, अवटणो आठे पोहर।। 5।।
कोयल आंबे रे करै, भमरो कमलै जाय।
मांहरा मन मे थें वसो, थांहरी कही न जाय।। 6।।
मन तन रा मेलाह, कर लीज्यो कमलापती।
बिहांण इण बेलांह, कुंण जांणइ होस्यां कठे।। 7।।

अब तो तोबाइल और अनेक साधन विकसित होने से प्रेमपत्र लिखना-पाना ही बंद हो गया है।

पोथीखाना

भरे-पूरे शानदार लोगों की यादें

'सम्बोधन' पत्रिका के सम्पादक तथा कथाकार कमर मेवाड़ी ने जीवन के विविध क्षेत्रों में नये आयाम तथा नव उपलब्धियां प्राप्त करते हुए समाज में प्रतिष्ठा कायम करने वाले व्यक्तियों की स्मृतियों को ताजा करते हुए अपने संस्मरणों को 'यादें' नामक संग्रह में प्रस्तुत किया है।

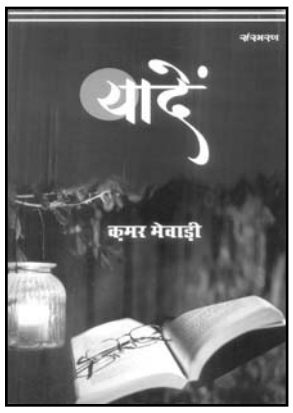

यह प्रयास दो कारणों से महत्वपूर्ण बन जाता है। पहला यह कि इससे लेखक की संवेदनशीलता, मार्मिकता, निर्भीकता तथा साफगोई का पता चलता है और दूसरा यह कि इससे बदलते दौर में संस्मरण विधा की आवश्यकता और अनिवार्यता दोनों की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट होता है। इसके अलावा, इन संस्मरणों की भाषा की रवानी और अपनापन भी अलग से रेखांकित किया जा सकता है। विवेक सम्मत नजरिया बनाये रखते हुए भी किसी व्यक्तित्व की बारीकियों को सामने लाने का प्रयास इन रचनाओं की पठनीयता को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होता है।

साहित्यिक क्षेत्र से जिन व्यक्तियों का यहां समावेश हुआ है उनमें नंद चतुर्वेदी, हरीश भादानी, मणि 'मधुकर', विष्णुचंद्र शर्मा, मनमोहन ठाकोर, आलमशाह खान, स्वयंप्रकाश, हेतु भारद्वाज इत्यादि से जुड़ी हुई स्मृतियों का आलेखन है जबकि सामाजिक, सार्वजनिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक क्षेत्रों से आने वाले निरंजननाथ आचार्य, आचार्य तुलसी, डॉ. महेन्द्र भानावत, मधुसूदन पांड्या, देवेन्द्र कर्णावट, कालेखां, शम्भूलाल शर्मा, हर्षलाल पगारिया, गेहरीलाल नंदवाना तथा आत्माराम सरीखे उन लोगों की आत्मीय स्मृतियों से अनुभव प्रकट हुए हैं, जिन्होंने लेखक के मनोमस्तिष्क पर व्यक्तिगत परिष्कार, विस्तार तथा आत्मपरक मूल्यांकन की दृष्टि से महत्वपूर्ण योगदान किया है।

ये तमाम संस्मरण कमोवेश कमर मेवाड़ी के उन व्यक्तिगत गुणों की ओर भी संकेत करते हैं जिन्हें हम कर्ज अदायगी तथा आभार-प्रदर्शन का पर्याय मान सकते हैं।

इन संस्मरणों के जरिये यह बात भी सामने आती है कि लेखक के परिचय तथा कार्यक्षेत्र का दायरा काफी विस्तृत है, और यह भी कि उसकी नजर अन्य व्यक्तियों की अन्तर्निहित संभावनाओं तथा क्षमताओं को रेखांकित करने में समर्थ है।

रचनाकार के जीवन संघर्षो का साक्षी बन कर जिन लोगों ने उसे सम्बल एवं हौंसला दिया, तथा इसे जिस कृतज्ञता तथा अपनापे के साथ लेखक ने यहां व्यक्त किया है, वह रोचक भी है, और गंभीर भी। प्रेरक भी है तथा विचारणीय भी है और ये तमाम चीजें एक साथ मौजूद होने को ही कमर मेवाड़ी की सृजनात्मक समृद्धि तथा बौद्धिक विस्तार का पर्याय माना जाना चाहिए।

संवाद शैली और वर्णनात्मक शैली दोनों ही लेखक के मंतव्य तथा गंतव्य को स्पष्ट करने में सफल है। सम्पादक तथा लेखक कमर मेवाड़ी ने इन दोनों ही भूमिकाओं में जो अनुभव-सघनता तथा अनुभव-सम्पन्नता प्राप्त की है, वह काफी हद तक उन व्यक्तित्वों की संगत का सुफल भी कही जा सकती है।

कुल मिलाकर इतना कहा जा सकता है कि कमर मेवाड़ी इन संस्मरणों के बहाने गाहे-बगाहे हमारी मानवीय कमजोरियों, खामियों और दोहरेपन को तो सामने लाते ही हैं लेकिन साथ ही साथ मनुष्य के रचनाकार व्यक्तित्व में मौजूद सकारात्मक, गुणात्मक, भावनात्मक, संवेदनात्मक तथा आत्मीय तत्वों को भी प्रकट करते हैं।

व्यक्तिगत संकीर्णताओं से ऊपर उठकर अपने को अन्य से जोड़ना जो आगे जाकर आपका आत्मीय बन जाता है, बेहद मुश्किल तथा जोखिम भरा काम बन जाता है।

इस बात में कोई संदेह नहीं कि कमर मेवाड़ी अपनी यादों की इस यात्रा में संवेदनपरक भाषा, आत्मीय लगाव, खुलेपन के भाव तथा मानवीय गुण-ग्राहकता के आधार पर पाठक को प्रभावित भी करते हैं और इन रचनाओं में स्वाभाविक सम्प्रेषणीयता को संभव भी करते हैं। नीरज बुक सेन्टर, दिल्ली-91 से प्रकाशित 144 पृष्ठीय इस पुस्तक का मूल्य 395 रूपये है।

-डॉ. कुन्दन माली

चिर सहचरी, मृत्यु विषयक चिन्तन

प्रत्येक जीवधारी प्राणी के दो ही स्वरूप हैं- जीवन और मृत्यु। जीवन यदि उत्सव है तो मृत्यु महा उत्सव। जीवन के बाद व्यक्ति का आगमन होता है। मृत्यु के बाद उसका बहिर्गमन। जिस रूप में वह जीया उस रूप में उसकी उपस्थिति सदैव के लिए ओझल हो जाती है।

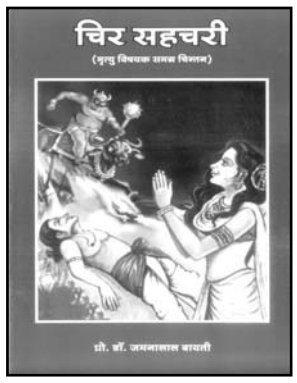

जीवन और मृत्यु के सम्बन्ध में अनेकानेक ग्रन्थों, विद्वानों, पंडितों, शास्त्रज्ञों और अनुभवियों ने जितना जो कुछ लिखा है वह चकित कर देने वाला है। उससे हम किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंच सकते बल्कि रहस्यों और चमत्कारों के कई बिम्ब खुलते, खिलते, बिगड़ते, बनते, बोझिल हुए लगते हैं। यह मुद्दा रहस्यमय ही रहेगा।

इस सम्बन्धी विविध और विभिन्न मान्यताओं का ही यह आलम है कि कोई किसी एक मत याकि धारणा स्थापित नहीं कर पाया जो सबके लिए मान्य स्वीकार्य हो। पढ़े-लिखे समाज के अलावा वह लोक जो सब कुछ अलिखित अथवा श्रुत किंवा कण्ठासीन ज्ञान से आश्रित आस्थावान बना हुआ है, उसकी भी मृत्यु के सम्बन्ध में अपनी आधारभूत धारणाएं हैं। वे आंखिन देखी, जीवन भोगी हैं, कागज लेखी नहीं।

ऐसे अनेक लोग दीर्घकालीन विविध प्रान्तीय भ्रमण यात्राओं में सम्पर्क में आये हैं जो अपनी दीर्घकालीन साधना से सूक्ष्म शरीरी हवा भाखी बने हुए हैं। उनमें मन चाहा कोई रूप धारण करने की शक्ति है। वे उन सब जगह मिल जायेंगे जहां-जहां बड़े-बड़े धार्मिक मेले आयोजित होते हैं। कुम्भ जैसे मेलों में ऐसी आत्माएं अनेक रूपों में देखने को मिलती हैं।

डॉ. जमनालाल बायती ने 'चिर सहचरी' नामक पुस्तक में मृत्यु विषयक उन अनेक बातों का जिक्र किया है जो यत्र-तत्र विविध पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं और जिनके सम्बन्ध में विद्वानों ने लिखा है। इस दृष्टि से यह पुस्तक दो भागों में विभक्त है। भूमिका में देवर्षि कलानाथ शास्त्री का यह कथन द्रष्टव्य है-

'इस ग्रन्थ में मृत्यु पर चिन्तन तो है ही उसके विभिन्न आयामों पर लेख हैं। विभिन्न भाषाओं के दार्शनिकों, साहित्यकारों और विचारकों ने उस पर जो अभ्युक्तियां दी हैं उनके उदाहरण हैं। हमारे धर्मग्रन्थों, दार्शनिक ग्रन्थों, पुराणों, शास्त्रों आदि में उस पर जो विचार उपलब्ध हैं उनसे बचने के जो उपाय अपनाए जाते रहे हैं उनका संकलन है। इस दृष्टि से एक व्यापक आपाततः भीषण लगने वाले किन्तु अल्प परिज्ञात और अपेक्षाकृत साहित्य में अल्प चर्चित विषय पर प्रभूत सामग्री देने वाला यह ग्रन्थ सर्वथा नई जमीन तोड़ता है।'

प्रथम भाग में मृत्यु, जीव, कर्मफल, प्राणों का निष्कासन आदि पर विस्तृत विवेचन है। दूसरे भाग में मृत्यु, जीवन, रहस्य, मृत्युबोध, जीवन की महायात्रा, मृत्यु की आहट तथा मृत्यु विषयक सामाजिक मान्यताओं पर विद्वानों के विचार-आलेख दिये गए हैं। इस भाग का सम्पादन डॉ. कृष्णा माहेश्वरी ने किया है। लगभग सवा सौ पृष्ठ की यह सादी पुस्तक तुलसी मानस संस्थान 39, माथुर वैश्यनगर, टौंकरोड़, जयपुर से छपी है। इसका मूल्य 500 रूपया अधिकाधिक है। कहना चाहिए, इतना भारी भरकम मूल्य किसी किताब को महत्वपूर्ण नहीं बनाता और न पाठकों में पढ़ने की जिज्ञासा ही देता है।

भारतीय इतिहास दृष्टि और सिन्धु दर्शन

भारत सदा ही संस्कृति के चरम विकास का केन्द्र रहा है। इसके निर्माण में नदियों का अत्यधिक योगदान है। इस दृष्टि से सिन्धु नदी का विशिष्ट महत्व है। सन् 1997 से सिन्धु यात्रा प्रति वर्ष लेह में सिन्धु के घाट पर आयोजित हो रही है।

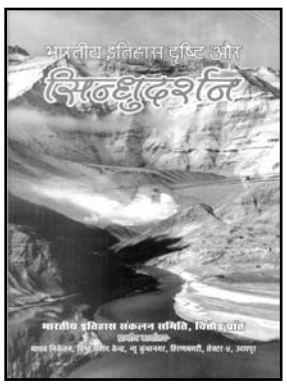

लेखक छगनलाल बोहरा अपने परिवार व इष्ट मित्रों सहित लेह के आसपास के स्थानों की यात्रा करते हुए सिन्धु दर्शन के कार्यक्रम में सम्मिलित हुए थे।

उन्होंने हजारों वर्षों के इतिहास को बहुत ही सीमित पृष्ठों में समेटने का बहुत ही सफल प्रयास किया है। विवरण प्रभावशाली है। पाठकों के सम्मुख हजारों वर्षों की घटनाएं स्थान आदि जीवन्त हो जाते हैं। यह ऐसा वृतान्त है जिसमें इतिहास, संस्कृति, आध्यात्मिकता का सामन्जस्य मन व मस्तिष्क को झकझोरता है तथा कुछ कर गुजरने की प्रेरणा प्रदान करता है।

यह विवरण केवल प्रकृति एवं ऐतिहासिक घटनाओं तक ही सीमित न रह कर स्थानीय व्यक्तियों की जीवनशैली, उनकी मनोभावना एवं चिन्तन को भी सुन्दर शब्दों में चित्रित करता है। इस यात्रा के दौरान क्षेत्र में तैनात सैनिकों से मिलने के अवसर का भी लेखक ने लाभ उठाया है। टेक्सी चालक जेल्सिन की बातों में देशभक्ति की अटूट भावना चीन और पाकिस्तान के प्रति उसका रोष एक व्यक्ति का न होकर लद्दाख की समस्त जनता का लगा।

यह विवरण बहुत ही सहज है। लगा जैसे पाठक भी उनके साथ सहयात्री बना हुआ है। यथा- अत्यन्त व्यस्त और दुर्गम मार्ग से गुजरती हुई बस, एक तरफ ऊंचे पर्वत और दूसरी ओर हजारों फीट गहरी खाई में बहती हुई नदी, नीच की ओर देखने पर शरीर में झुरझुरी सी होने लगती है। पहाड़ी ढलानों पर बसे छोटे-छोटे गांव। रास्ते में सड़क पर पेड़ गिर जाने से एक स्थान पर वाहनों की लंबी कतार लग गई। जहां हमारी बस रूकी वहां पास ही ऊंचाई से झरना गिर रहा था।

सभी यात्रियों ने उतर कर झरने के पास शीतलता का अनुभव करते हुए फोटोग्राफी की। सीमा सड़क संगठन के कर्मचारियों ने आकर जे.सी.बी. से पेड़ हटाया तो वाहन आगे बढ़ने लगे। अनेक गांवों-कस्बों से होते हुए रात्रि 12 बजे बाद श्रीनगर पहुंचे जहां होटल माउटेंन व्यू में विश्राम किया। होटल छोटा पर साफ सुथरा व सुंदर था।

इस यात्रा विवरण को भावना मिश्रित यथार्थ में प्रस्तुत करने के लिए लेखक को बहुत-बहुत साधुवाद। आशा है कि यह पुस्तक भारतीय संस्कृति और स्वतंत्रता को अक्षुण्ण बनाये रखने हेतु जनमानस में त्याग, बलिदान की भावना जागृत करने में सहायक होगी तथा अखण्ड भारत का मार्ग प्रशस्त करेगी।

-प्रो. के. एस. गुप्त

जिंदगी और मौत के दस्तावेज के बीच लेखक

अपने समय के स्थापित साहित्यकारों ने स्वतंत्र रूप से अथवा अपनी रचनाओं के माध्यम से समय-समय पर अपनी जिन्दगी और मौत के दस्तावेज लिखे हैं। अपने अनुभवों अथवा अनुभूतियों के स्तर पर उन्होंने जो कुछ महसूसा उसे पाठकों के साथ हिस्सेदारी की है।

प्रस्तुत पुस्तक में डॉ. कल्याणप्रसाद वर्मा ने साहित्य के पुरोधा जैनेन्द्रकुमार, अमृतलाल नागर, हरिशंकर परसाई, ख्वाजा अहमद अब्बास, आचार्य किशोरीदास वाजपेयी, डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी, विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण', विमल मित्र तथा डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' ने जिन्दगी और मौत से जुड़े जो विचार व्यक्त किये हैं उनका प्रकाशन किया गया है। ये सभी विचारक हिन्दी साहित्य के ख्यातलब्ध लेखक हैं। कादम्बिनी मासिक पत्रिका के 1977-78 के अंकों में जिन्दगी और मौत के दस्तावेज नाम से जो शृंखला प्रारम्भ की गई थी उसमें ये सभी लेखक सम्मिलित किये गए थे।

डॉ. कल्याणप्रसाद ने प्रारम्भ में प्रत्येक लेखक के जीवन और साहित्य पर सारगर्भित प्रकाश डालते हुए अंत में जिन्दगी और मौत के सम्बन्ध में लिखे गये मंतव्य को प्रकाशित किया है। उपन्यासकार जैनेन्द्रजी ने लिखा- कुशलता विद्वता की छाया भी मेरे पास न रह जाए। सिर्फ एक प्रेम ही प्रेम रह जाए। लिखने में, रहने में, जीने में, करने में प्रेम के सिवाय दूसरा मुझे कुछ अजीज नहीं है। जाते-जाते मृत्यु के सत्य के प्रति मेरे मन में प्रणाम हो और अपने लिए बस एक क्षमा की मांग हो। (पृ. 20)

हजारीप्रसाद द्विवेदी ने लिखा- जो जिन्दगी का कोई दस्तावेज नहीं बना सका वह मौत का दस्तावेज क्या तैयार करेगा। कौन जानता है कि कुछ बनाते-बनाते क्या बन जाऊं? सो मैं इस झमेले में नहीं पड़ता। (पृ.88)

यों हर प्रबुद्ध पाठक भी जिन्दगी और मौत को लेकर औरों के लिए ही नहीं, स्वयं अपने बारे में भी जानने की जिज्ञासा रखता है। इसीलिए यह पुस्तक एक भिन्न रूप में अधिक पठनीय और पठन के पूर्व उत्सुकता जगाने वाली है। इसका प्रकाशन 126 पृष्ठ लिये महेश प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स, 926-बी, ग्रीन हाऊस, चौड़ा रास्ता, जयपुर से हुआ है और मूल्य 150 रूपये है। **-डॉ. कहानी भानावत**

खोज-खबर

राजा द्वारा गीदड़ों को कम्बलों का दान

एक दिन गीदड़ों सम्बन्धी प्रसंग में डॉ. पुरूषोत्तम छंगाणी ने मुझे एक कथा सुनाई जो यह थी-जैसलमेर का एक राजा था। वह बड़ा कंजूस और मनमौज्या था। अपनी प्रजा के लिए वह कुछ भी नहीं करना चाहता था। धनमाल की उसके पास कोई कमी नहीं थी। मंत्री चाहता कि राजा के हाथ से कोई ऐसा काम हो जिससे लोगों का भला हो और राजा की वाहवाही हो। वह कोई युक्ति सोचने लगा।

सर्दी के दिन आये। एक दिन कड़ाके की सर्दी में मंत्री ने लोगों को ठिठुरते देखा और कई बच्चों व बूढ़ों को मरते सुना तो रात भर उसे नींद नहीं आई। इसी बीच उसने आस-पास के खेतों में गीदड़ों की जोर-जोर की आवाज सुनी। वह उठ बैठा और बड़ा प्रसन्न हुआ कि उसे एक अच्छी युक्ति हाथ लग गई जिससे वह प्रात: होते ही राजा से निवेदन कर लोगों की भलाई के लिए कुछ करवा सकेगा।

सुबह हुई। प्रतिदिन की भांति वह राजा के पास पहुंचा। राजा ने जब मंत्री को हालचाल पूछे तो मंत्री बोला-आपके राज्य में और तो सब अमन चैन है पर गीदड़ बड़े दुखी हैं। उन बिचारों के लिए कुछ होना चाहिए। वे रात-रात भर सर्दी से ठिठुरते कराहते रहते हैं। राजा को सुनते ही दया आ गई। उसने मंत्री से राय मांगी कि उनके लिये क्या करना चाहिए। मंत्री ने कहा-सारे गीदड़ों को ओढ़ने के लिए कम्बलें दे दी जाय और रहने के लिए पठियाल बनवा दिये जाय। मंत्री को तो हुकम की देर थी। उसने हजारों कम्बलें तथा गांव-गांव पठियाल बनवाये। इससे कइयों को रोजगार मिला। जब कम्बलें बन गई तो मंत्री ने गांव-गांव गरीब लोगों में उन्हें बंटवा दीं जिससे लोग सर्दी से अपनी रक्षा कर सके और पठियालों में बे-घरबारी रातवासा कर सके। मंत्री ने यह सब करके राजा को सूचना दे दी। राजा बड़ा प्रसन्न हुआ कि अब उसके राज्य में कोई दुखी नहीं रहेगा।

एक दिन जब राजा सोया हुआ था कि उसे गीदड़ों का शोर सुनाई दिया। वह नहीं समझ पाया कि अब गीदड़ों को किस बात का दुख है और वे क्या चाहते हैं। सुबह होते ही उसने मंत्री को बुलवाया और इसका कारण पूछा। हाजिर जबाब मंत्री बोला -हजूर, अब उन्हें कोई कष्ट नहीं है। वे तो आपको धन्यवाद देने आये थे कि राजा साहब आपने बहुत अच्छा किया। मंत्री की इस बात पर राजा बड़ा प्रसन्न हुआ और इतने अच्छे कार्य के लिये उसे इनाम दिया।

कहना न होगा कि न केवल जैसलमेर में, अपितु राजस्थान के प्रत्येक अंचल में राजा का यह किस्सा आज भी लोगों की जबान पर चढ़ा हुआ है। जैसलमेर के कई गांवों में तब की बनी पठियालें उस राजा की स्मृति लिये अब भी राहगीरों के लिये विश्रामगृह बनी हुई हैं। जैसलमेर शहर में उस समय की बनी धर्मशाला 'गीदड़ों की धर्मशाला' के नाम से प्रसिद्ध है। आज वह राजा नहीं है मगर उसकी अमरता के गीतड़े और भींतड़े वर्षों तक उसे याद करते रहेंगे।

मेवाड़ में इन्हीं गीदड़ों से संबंधित एक बात प्रचलित है जो कलाकार दयाराम ने मुझे बताई। उसके अनुसार कहा जाता है कि पहले सियार शहर में तथा कुत्ते जंगल में रहते थे। एक दिन कुत्तों ने बैठक की कि सियार तो शहर में मौज करते हैं और हम व्यर्थ में ही जंगल में मारे-मारे फिरते हैं अत: उन्होंने शहर में जाकर सियारों को खदेड़ना प्रारम्भ किया। सियार मारे डरके भागने लगे। भागते-भागते एक बूढ़े सियार को एक आदमी ने कहा कि तुम क्यों भाग रहे हो? तुम्हारे नाम का तो शहर में रहने का पट्टा लिख रखा है। उत्तर में सियार ने कहा-पट्टा किनें बतावां। काम तो गंडकांऊं पड्यो है। (पट्टा किसको बतायें। काम तो कुत्तों से पड़ा है।) तब से सियार जंगल में और कुत्ते शहर में रहने लगे और यह कहावत चल पड़ी।

माहात्म्य गधों का

यों गधा बड़ा सहनशील प्राणी होता है। पूरी उम्र भर आप उसे लादते रहें तो भी वह बिचारा कुछ नहीं कहेगा पर कभी-कभी तो आपको उसे अपनी मस्ती के लिये छोड़ना ही पड़ेगा। यह भी कहा जाता है कि उस पर जितना अधिक भार रहेगा वह उतना ही ठीक होता हुआ चलेगा। उससे किसी को क्या डर! न किसी को काटता है न किसी को दुलत्ती देता है। सींग तो उसके होते ही नहीं। प्रतिदिन कई लोग उसके नाम से शोभित होते हैं फिर भी उसने कभी कोई शिकायत नहीं की। कभी भी कोई भी उस पर सवारी करे, वह हर समय तैयार रहता है। माता शीतला का वह खास वाहन है और कुम्हारों का तो सर्वेसर्वा ही समझिये।

शीतला के लोकगीतों में गधे के कई उल्लेख आते हैं। चुरू के प्रसिद्ध अन्वेषक श्री गोविंद अग्रवाल ने बताया कि बच्चों की माताएं अपने छोटे-छोटे बालकों को 'माताजी का गधिया' तक कहती सुनी गई हैं ताकि उसकी माताजी (चेचक) से रक्षा हो सके। इसीलिए माताजी निकलने पर बच्चों को गधे के गधलेड़े (लींडे) तथा उसकी पूंछ के बालों का धुंआ दिया जाता है। किसी जमाने में शत्रु द्वारा विरोधी सामंत के गढ़ को नष्ट कर उस पर गधों से हल चलवा देने की प्रथा थी।

श्री सुबोधकुमार अग्रवाल ने अपनी शोधयात्रा के दौरान चुरू जिले की सुजानगढ़ तहसील में स्यानण की डूंगरी के प्राचीन अवशेषों में 'गधागाल' के अंकन पाये हैं। गुजरात -सौराष्ट्र में तो धार्मिक अथवा सार्वजनिक उपयोग की भूमि पर गधागाल के पालिये लगाने की प्रथा रही है ताकि उस भूमि को कोई हड़प नहीं पाये।

सर्दी के बाद ये गधे मस्ती में आते हैं। होली पर तो लोगबाग भी बड़े चाव से इन पर सवारी कर होली की ठिठोली को विशेष रंग देते हैं।

अपनी सर्वेक्षण यात्राओं में मैंने शीतला सप्तमी पर महिलाओं द्वारा दीवालों पर मांडे जानेवाले विविध थापों में गधे को रथ खींचते हुए देखा है। यह थापा कंकू का बना हुआ था जिसमें ऊपर की ओर चांद-सूरज बने हुए थे। रथ के नीचे दो पंक्तियों में नौ-नौ बिंदियां लगी हुई थीं। यह थापा कुमकुम का बना हुआ था। चित्तौड़ के बसी गांव में एक कुम्हार के घर यह थापा सन् 1962 के दौरान देखा गया था।

होली के दिनों में जैसलमेर-बीकानेर में आयोजित पारम्परिक ख्याल-रम्मत के विशेष अध्ययन के लिये मैं बीकानेर गया और वहां के विविधनामी चौकों में रम्मतों-ख्यालों के वैविध्यपूर्ण ख्याल-तमाशे तथा नाटक-नाट देखे पर वहां के प्रसिद्ध बारहगुवाड़ के चौक में जब बहु प्रसिद्ध पारम्परिक हिड़ाऊमेरी नामक रम्मत को देखने गया तो पूजा-विधि के पश्चात लगभग एक बजे रात्रि को यह रम्मत प्रारम्भ हुई।

प्रारम्भ में गणेश का स्वांग प्रदर्शित हुआ। उसके बाद बोहरा-बोहरी का स्वांग आया जिसमें मैंने बोहरे बने लड़के को एक गधे पर बैठा पाया। मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। बोहरा-बोहरी दोनों छोटे-छोटे छोकरे ही थे। उनके साथ बच्चों का खासा झुंड था जो बोहरा और बोहरी दोनों को छेड़ रहा था। बोहरी बने लड़के के पीछे तो वे इतने पड़े कि उसकी घघरी तक खींच-खींच कर फाड़ दी मगर बोहरी जरा भी विचलित नहीं हुई। वह अंत तक हंसती-मुस्काती अपना सफल प्रदर्शन ही करती रही। बीच-बीच में दोनों के संवाद चलते फिर दर्शक लड़के अपनी बातें भी उनसे कह सुन बैठते। उनकी गीत पंक्तियां थी-

चाचा बोहरा आया रे हाथ में लोठा लाया रे
चाचा बोहरा आया रे
बाणिया रे जीमण गयो वारे पड़ग्यो टोटो रे
बोहरी सूं बाण्यो लड़ग्यो भूल आयो लोटो रे
यो बोहरो घणो खोटो रे
या बोहरी घणी खोटी रे

राजस्थान नहर के निर्माण में तो गधों का ही कमाल रहा है। यदि गधों का सहयोग नहीं मिलता तो नहर बन ही नहीं सकती थी। गधों के इसी महत्व और माहात्म्य को दृष्टिगत रखते हुए राजस्थान के नेता साहित्यकार निरंजननाथ आचार्य ने सरकार का ध्यान इन गधों की ओर आकृष्ट किया और गधों पर डाक टिकिट निकलवाने की पहल की थी। इसमें कोई आश्चर्य नहीं यदि आचार्यजी जीवित होते तो वे निश्चय ही यह कार्य करा गुजरते। गधों संबंधी कई कथा-किंवदंतियां, शकुन-अपशकुन और कहावत-किस्से प्रचलित हैं। यदि कोई गधों के पीछे ही पड़ने का पराक्रम ठान ले तो एक पी.एच.डी. उसे भी प्राप्त हो सकती है।

हास्यकवि गोपालप्रसाद व्यास ने लिखा था- 'मैं गधे चराया करता हूं।' एक किस्सा मैंने सुना कि एक हाथी कुम्हारवाड़े में चला गया। वहां सब गधे ही गधे थे। हाथी को देख उन गधों ने उसे घेर लिया। बिचारे हाथी को बड़ी दुर्गत झेलनी पड़ी। उसे सीख यह मिली कि उसे कहां, कब, कैसे जाना चाहिए, इसका विवेक उसे ही रखना होगा।

- म. भा.

मेनार में प्रेम के परिंदें

गुजरात स्थित कच्छ के रण में प्रजनन करने वाले फ्लेमिंगों पक्षी इन दिनों उदयपुर जिले के मेनार गांव के तालाब में जलक्रीड़ारत हैं। इन पक्षियों को पिछले कई वर्षों से यहां की आबोहवा बड़ी रास आ रही है और यही कारण है कि इन दिनों यहां पर सैकड़ों की संख्या में यहां विचरण कर रहे हैं। लंबी सुराहीदार गर्दन, आकर्षक चोंच व गुलाबी लंबी टांगों वाला यह पक्षी राजहंस या हंसावर के नाम से भी जाना जाता है। लगभग पांच फीट ऊँचाई वाला यह पक्षी अपनी मनोहारी उड़ान के लिए भी पहचाना जाता है। सफेद लाल रंग के पंखों पर काले रंग के किनारों के साथ आसमान में उड़ता इनका दल हर किसी को सम्मोहित करता है। कतारबद्ध हो दौड़कर उड़ान भरते फ्लेमिंगों किसी जेट विमान से प्रतीत होते हैं। दो फ्लेमिंगों जब आमने सामने खड़े होकर एक दूसरे से चोंच लड़ाते हैं तो यह प्रेम के प्रतीक को साकार करते हैं।

- फोटो- कमलेश शर्मा

शब्द रंजन

उदयपुर, मंगलवार 15 जनवरी 2019

सम्पादकीय

चौथे वर्ष में चौथा पाया

अखबार की उम्र और बच्चे की उम्र की तुलना नहीं की जा सकती। अन्य प्राणियों की, हाथी से लेकर चींटी तक की औसत उम्र निश्चित है। अखबार की उम्र उससे जुड़े मुख्य व्यक्ति से सम्बन्धित है। ऐसे कई अखबार हैं जो दीर्घजीवी बने हुए हैं और स्थायीत्व लिए हैं पर अधिकाधिक अखबार असामयिक बने अकाल मृत्यु प्राप्त कर लेते हैं।

कुछ अखबार रेंगते हुए, घसीटते हुए अपना अस्तित्व बनाये रखते हैं। उनकी चमक उनके स्थापना काल में तो देखने को मिलती है पर धीरे-धीरे वे फ्यूज होते अपनी दमक खो बैठते हैं और स्थायी रोग जैसे व्यक्ति को रूग्ण बनाये रखता है वैसे ही वह अखबार बेअसर हुआ चलता है।

कुछ अखबार बिना आहट दिये चुपचाप निकलते हैं। घड़ी की टिक्-टिक् की तरह एक निश्चित परिधि में उनकी स्वांस-खांस दस्तक देती लगती है। अखबारों की दुनियां विचित्र है। यह विचित्र संयोग है कि अखबार कैसा भी हो, अखबार तो है ही। उसका महत्व भी बना रहेगा। वह लोकतंत्र का चौथा पाया ऐसे ही नहीं बना हुआ है।

आज के दौर में देखें तो अखबार निकालना टेढ़ी खीर है। छोटे अखबारों का कभी बड़ा बोलबाला था। कई छोटे अखबारों ने बड़े काम और नाम किये। देश की आजादी में बड़े अखबारों की बजाय छोटे अखबारों की भूमिका को अधिक रेखांकित किया गया है। तब अखबार निकालना शान की बात थी लेकिन धीरे-धीरे छोटे अखबारों का महत्व घटता गया। आज छोटे अखबारों के सामने कई चुनौतियां और संकट तथा संघर्ष है।

बड़े घरानों से निकलने वाले अखबार के आगे बड़ी मछली के आगे छोटी मछली जैसी कहावत जुड़ गई है। कलात्मक छपाई, रंगीन मिजाज और अप्टूडेट चकाचक साजसज्जा के लिए अर्थ जरूरी है। कम्पीटिशन के आगे छोटे अखबार डूंज के वायरे की तरह लगते हैं। फिर पीत पत्रिका, पेड न्यूज जैसे जुमले भी सुनाई दे रहे हैं। तब भी छोटी चिड़िया, छोटा आदमी भी अपना अनूठा अस्तित्व रखता है। कितना ही कुछ कर लिया जाय, पूरी दुनियां एक जैसी नहीं होगी। छोटी दुनिया और बड़ी दुनिया सदैव बनी रहेगी।

शब्द रंजन जैसे अखबारों की भी अपनी दुनियां है। इस दुनियां में रहने वाले, उसे पसंद करने वाले और उसका मजा लेने वाले लोग जब तक रहेंगे, शब्द और रंजन की दुनियां भी अपनी चौपाल देती रहेगी। ऐसे में शब्द रंजन कहां खड़ा है, यह निर्णय पाठकों को करना है। इसके प्रकाशन के तीन वर्ष पूरे हो चुके हैं। यह खबर, इससे जुड़े पाठक, हमारे आत्मीयजन तथा पीठ थपथपाने वोल सहयोगी बन्धुओं को अच्छी लगेगी। शब्द रंजन के सभी पाठकों, विज्ञापनदाताओं एवं शुभचिंतकों का का समय-समय पर सहयोग देने के लिए हार्दिक आभार।

मौताणा समस्या है, क्राइम कैसे ?

जीवन का बहुत सा हिस्सा अलिखित है। हर चीज लिखित से नहीं चलती। इसको हमें समझना होगा। हर चीज कानून से नहीं चलती। अपने-अपने ढंग से जीने वाले समाजों ने अपनी समस्या का हल निकाला है। समाजविज्ञानी मानते हैं कि जितने भी प्राचीन समुदाय हैं वे अपनी परम्परा से चलते हैं। वहां कानून की जरूरत क्यों हो, यह विचारणीय है।

पहले सामूहिक जीवन की प्रधानता थी। धीरे-धीरे व्यक्तिगत जीवन का प्राधान्य हो गया। नियम भी पहले सामूहिक अधिक थे। अब व्यक्तिगत अधिक हैं। गलती के लिए जो दण्ड विधान था वह सामूहिक था।

मौताणा आधुनिक हिसाब से क्राइम है। उन लोगों ने जिसे सिविल माना, हमने उसे क्राइम माना। सिविल रूप में वह समस्या है, क्राइम नहीं। जो हानि हुई है वह क्षतिपूर्ति द्वारा सम्भव है। कानून की प्रक्रिया बड़ी जटिल है। मौताणा में समझौता है। जिस किसी गलती की क्षतिपूर्ति सम्भव हो, वह समाज पिछड़ा कैसे कहेंगे। वह तो अधिक विकसित समाज है।

- डॉ. ब्रजराजसिंह चौहान

पगड़ी : राजस्थान की देन

पगड़ी की महिमा अपरम्परा है। राजस्थान में पगड़ियों के पचासों रूप-प्रकार हैं। यहां तो पगड़ी किसी समय आदमी की पहचान मानी जाती थी। राजस्थान इस पगड़ी का मूल उद्गम स्थल रहा है।

सर पर पहनी जाने वाली वस्तुओं में सबसे अधिक प्राचीन और प्रचलित पगड़ी ही है। मोहनजोदड़ो की खुदाई से यह बात स्पष्ट हो गई कि उस काल में यानी 3000 वर्ष पूर्व भी आदमी रूई से कपड़े बनाना जानता था। इन कपड़ों पर पक्का रंग और जरी का कार्य भी होता था। कपड़े का आविष्कार होते ही मानव ने अपने गुप्त अंगों के साथ-साथ सर को भी ढकना शुरू कर दिया। वैदिक काल में शीश-बंधन सुन्दरता का सूचक माना जाता था।

पगड़ी बांधते समय कपड़े को लपेटा जाता है जिसे पट कहते हैं। इसी पट से पटका शब्द बना। स्कार्फ जैसी बांधने की रीति को पटका कहा जाता है। रायबरेली के हीरो राजनारायण अपने सर पर जो हरा कपड़ा बांधते थे वास्तव में वह पटका ही था। इस पटके से पटकी शब्द बना जो बिगड़ते-बिगड़ते पगड़ी बन गया। पगड़ी को राजस्थान में 'पाग' भी कहा जाता है। विश्व में जितनी पगड़ियां हैं, मूलत: उनका उद्गम स्थल राजस्थान ही माना जाता है।

सिर पर पगड़ी और कमर में कमरबंधा बांधने का रिवाज ईसवी सन् से भी 200 वर्ष पुराना माना जाता है। पगड़ी और कमरबंध की चौड़ाई लगभग-लगभग समान होती है। इस कमरबंध को आज की दुनियां ने बेल्ट यानी पट्टे का रूप दे दिया है।

मौर्यकालीन युग की अनेक प्रतिमाओं में पगड़ी पहने हुए चित्र उपलब्ध हुए हैं। कुछ पगड़ियां लगभग सभी बालों को ढक देती हैं जबकि अनेक पगड़ियों में दोनों कानों के ऊपर वाले बाल स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ते हैं। उन दिनों भी राजा, प्रजा, सैनिक और पुरुष-स्त्रियों की पगड़ियों में भारी अन्तर था। अलग-अलग पगड़ियां अलग-अलग वर्ग का प्रतिनिधित्व करती थीं। पगड़ी का लटका हुआ छेड़ा आगे रखने का रिवाज शुभ माना जाता था। राजस्थान में साफे का लटकता भाग आज भी कंधे के सहारे आगे की ओर झूलता रहता है।

राजस्थान में भरतपुर के निकट नोह नामक स्थान से मिलने वाली मौर्य युग की यक्ष प्रतिमा सबसे पुरानी है। इस प्रतिमा पर पहनाई गई पगड़ी विश्व की

प्राचीनतम पगड़ियों का स्वरूप है। रेढ़ नामक स्थान पर ईसवी सन् से 200 वर्ष पूर्व एक पुरुष और स्त्री पगड़ी धारण किये हुए मृण प्रतिमाएं मिली हैं। ऐसी ही पगड़ी वाली प्रतिमा लालसोट के एक स्तंभ पर भी मिली है। बीकानेर के रंग महल में तीसरी शताब्दी पूर्व की पगड़ियां देखी जा सकती हैं। झालावाड़ में 12वीं शताब्दी की अर्ध नारीश्वर की प्रतिमा के आधे भाग में शिव के सिर पर पगड़ी देखने को मिलती है।

मुगल जब भारत आये तो अपने साथ गोलाकार पगड़ी लेकर आए जिसे फारसी में 'अमामा' कहा जाता है। अकबर के समय में चपटी पगड़ियों का बोलबाला था। राजस्थान में 16वीं शताब्दी में इस प्रकार की चपटी पगड़ियों की बहुलता देखने को मिलती है। उस समय के सभी चित्रों में यही चपटी पगड़ी दिखाई पड़ती है। मुगल बादशाहों में सबसे प्रसिद्ध जहांगीर के समय की पगड़ी है। मेवाड़ और मालवा शैली के सभी चित्रों में जहांगीरी पगड़ी का वर्चस्व है।

राजस्थान में पगड़ी के सबसे अधिक रूप हैं। इनमें जयपुरी, जोधपुरी, मेवाड़ी, करोती और हाड़ौती रूप बहुत प्रसिद्ध हैं। उदयपुर में फतेशाही, अमरशाही और भीमशाही पगड़ी बहुत ही जानी पहचानी है। जयपुर में खटेदार, चिकत्तरशाही, सलीमशाही और बीकानेर में गजशाही तथा अखेशाही पगड़ी प्रख्यात है। पगड़ियों के नाम राजा और राजपूतों की भिन्न-भिन्न जातियों के नाम पर रखे गए हैं।

जयपुर में पहनी जाने वाली लाल और सफेद पगड़ी वहां के अस्त-व्यस्त जीवन की प्रतीक मानी जाती है जबकि जयपुर की पंचरंगी पगड़ियां वहां की कलात्मक और शृंगार प्रियता की सूचक हैं। पगड़ियों का एक स्वरूप प्रादेशिक स्तर भी था जैसा कि दक्षिणी पगड़ी, पूर्वी पगड़ी, बंगाली, पंजाबी, खानदेशी, मालवी और राजस्थानी पगड़ियां।

पगड़ियों में जरी के साथ-साथ राजा-महाराजा मोती और हीरे भी लगाते थे। राजस्थान में तो पगड़ी में जितने बल उतना ही आदमी गम्भीर और दूरदर्शी माना जाता था। तीन-चार या आठ-दस बल वाली पगड़ी को पहनने वाला साधारण बुद्धि का माना जाता था। पगड़ियों के सम्बन्ध में अनेक केस भी हो चुके हैं। बम्बई हाईकोर्ट का 'टरबाइन केस' इस मामले में बड़ा दिलचस्प है। एक धर्मगुरु ने अपने समाज में से उस व्यक्ति को मात्र इसलिए निष्कासित कर दिया था कि उसने दूसरी जाति के लोगों की पगड़ी पहन ली थी। सन् 1957 में एक धर्मगुरु के भाई की पगड़ी से बम्बई कस्टम विभाग ने हीरे भी पकड़े थे। यह व्यक्ति सीलोन से तस्करी के हीरे अपनी पगड़ी में छुपाकर लाया था।

बादशाहों में उत्तराधिकारी को राजतिलक के समय ताज पहनाया जाता था। उसी प्रकार अखाड़े के उस्ताद को साफा बान्धने और पिता की मृत्यु के पश्चात बड़े पुत्र को पगड़ी बांधने का रिवाज अनेक जातियों में है।

क्षमा याचना के लिए पगड़ी पैरों पर रख देने का प्रचलन है। दुनिया चाहे कितनी ही आगे बढ़ जाए फिर भी सर और उस पर पहली जाने वाली पगड़ी की महिमा कभी कम नहीं हो सकती। पगड़ी पहन झुकने से तात्पर्य अधीनता स्वीकार करने से है। महाराणा प्रताप ने मुगल बादशाह अकबर के आगे कभी पगड़ी नहीं झुकाई।

स्मृतियों के शिखर (67) : डॉ. महेन्द्र भानावत

बहुरूपों में रमण करते जानकीलाल

भांड एक जाति है। भांडाई करना इसका खास पेशा रहा है। यह भांडाई प्रशंसामूलक भी होती है तो गालीमूलक भी। रंग-रागमूलक भी होती है तो सांगमूलक भी। हंसीमूलक भी होती है तो अंगमूलक भी। ये भांड किसी के नहीं होते और सबके होते हैं। इनमें लिहाज-लाज सब खूंटी पर टंगे रहते हैं। कहते भी हैं कि भांड, भुवायां और हींजड़ा - ये तीनों कहीं निकल जाएं, अच्छों-अच्छों का भूंगड़ा कर पटकी दे देंगे। इनसे कोई जीत नहीं सकता और ये कहीं भूखे भी नहीं मरते। ये बड़े कबदी और कमाल होते हैं।

कहने को यह कहा जाता है कि घर की मां को डाकण कोई नहीं कहता पर भांड इसके अपवाद हैं। वे तो यह कहते हैं कि दूसरों की मां को डाकण कहने के पहले घर की मां को डाकण कहना पड़ेगा। लाख कोशिश करने पर भी भांड को कोई अपना नहीं बना सकता। भांड के अलावा और भी हैं जो किसी के नहीं होते। इसके लिए यह कथन प्रचलित है-

भांड भुवाई भाणजो रेबारी सुनार।
अतरा कींका न व्है कर देखो सत्कार ।।

राजस्थान के भांड बड़े नामी रहे हैं। राजा महाराजाओं के वहा अपनी कला-चातुर्य से इन्होंने बड़े-बड़े इनाम पाए। जागीरें तक प्राप्त कीं। आज इनकी संख्या बहुत कम रह गई है जो अपना पारंपरिक पेशा अपनाये हुए हैं। अब इन्हें बहुरूपिया कहा जाने लगा है पर बहुरूपिया तो कोई भी हो सकता है। जो तरह-तरह के रूप धारण करे। बहुत रूप बने वह बहुरूपिया। एक बहरूपिया कठपुतली खेल तमाशा करने आता है। उसका नाम ही बहुरूप है। उसके लिए कहा जाता है- 'और ये देखो बहुरूप भांड का लड़का। ये जनाना चेहरा। ये मरदाना चेहरा।' इस एक ही पुतली के एक ओर पुरुष तथा दूसरी ओर महिला बनी होती है।

इसमें कोई शक नहीं कि भांड किसी की नकल निकालने में जितना सिद्धहस्त होता है उतना कोई दूसरा प्राणी नहीं होता। चाहे बोलीचाली की दृष्टि से, चाहे वेशभूषा की दृष्टि से, चाहे भावाभिव्यक्ति की दृष्टि से, यह जिसका भी स्वांग भरेगा, पूरा वही-वही लगेगा। सांग चाहे गाडोलिया लुहार का हो, चाहे कंजर-कंजरी का। चाहे गायरी का हो, चाहे भोपा-भोपी का। फकीर, पठान, बणजारे का हो, चाहे पागल, लैला या मजनूं का। ईरानी का हो, चाहे पुलिस, सेठ का। राक्षस का हो या और किसी का। स्वांगों की कोई कमी नहीं है पर कोई पहचान नहीं पाएगा कि यह किसी की नकल है। यह नकल असल से भी भारी पड़ती है।

प्रतिवर्ष अपनी ओर से तुकबंध जो टीपणा ये निकालते हैं उसमें भी उनकी नकल की जोरदार छाप मिलती है। लोकजीवन में भी 'नकल तो भांड की' एक कहावत बनी हुई है। टीपणे की तुकबंदी का नमूना लीजिए-

ततवार गंगा स्नान/ पीर पंड पावणी/ पाप नै खै करणी/ धरम नै उदै करणी/ मालाचंदजी की फतै पाल है। सम्यौ तो सांड है/ सम्या का भगवान बंचै।

सतरा मण का कांदा/ अठारा मण की बाजरी/ नब्बै मण का शकरकंद/ रींगणा पचास मण का/ लूंग डोडा पंदरा मण का/ तजारो तेरा मण को/ मक्की तो अस्सी मण की/ जुवार नब्बे मण की----

उतारो मथरा नगरी को/ गिरत तो गाय को/ दही तो भैंस को / मनवार राबड़ी की/ खीचड़ी करमाबाई की/ पुत्र तो सरवण/ नकल तो भांड की/ बरदावो भाट को/-----

ऐसी टीपणी तुकबंदी में कभी-कभी भांड-भांड के आपस में होड़ चलती है कि कौन अच्छी तुकबंदी करता है और लोग किसको सराहते हैं। अड़भोपा भाट और भविष्यवक्ता बनकर भी भांडों ने जो सही सलामत काम किया उससे उनकी प्रतिभा, क्षमता, बुद्धि-चातुर्य और ज्ञानगुण का पता चलता है।

चित्तौड़ के जानकीलाल भांड राजस्थान के सिरमौर हैं। देश में ही नहीं, विदेश में भी इस कलाकार ने अपना सिक्का खनखनाया। अपने पिता हजारी के साथ भी उन्होंने कई स्वांग निकाले हैं। शिवाजी, प्रताप, झांसी की रानी बनकर जब हजारी निकलते तो लोग दांतों तले उंगली दबाकर रह जाते और यह पता नहीं कर पाते कि यह हजारी की करामात है। हजारी के अपने जीवन के कई किस्से हैं। इन किस्सों को सुनाते समय लगेगा जैसे सिनेमा के चित्र दृश्यमान हो रहे हैं।

एक किस्सा सुनाते हुए उन्होंने बताया कि एकबार उदयपुर महाराणा भूपालसिंहजी पीछोला में नाव की सवारी में थे तब नाव के पास एक मगरमच्छ ने अपना मुंह निकाला। सबने उसे सचमुच का मगर ही समझा पर बाद में जब यह कहा गया कि वह रामचंद्र नामक बहुरूपिया था तो महाराणा ने उसे खूब शाबासी और धोबा भर चांदोड़ी रूपये दिए। हजारी ने उसी दिन से मन में यह बात बैठा ली कि वे भी अपनी कला से कभी पीछे नहीं रहेंगे बल्कि इससे भी सवाया मान लेंगे और यह पाया भी। इन्हीं महाराणा से धोबे भर ही नहीं, गांठ बांध चांदोड़ी पाए।

हजारी के दादा जोरा थे। ये मांडल के पास भांड का खेड़ा में रहते। महाराणा फतहसिंहजी ने उन्हें चित्तौड़ बुला लिया। उन्होंने अपनी नकलाई में बहुत दूर-दूर तक नाम कमाया। एकबार चित्तौड़ से जंगल में महाराणा फतहसिंहजी शिकार पर निकले। थोड़ी दूर उन्हें एक असली नवहत्था शेर होने की भनक मिली। निशाना साधा गया। शेर के गोली लगी। वह पांव के बल खड़ा हो गया। सीने से फव्वारे की तरह खून छूटा। तब वह शेर बोला- 'खम्माघणी अन्नदाता म्हूं जोरो भांड हूं।' महाराणा बड़े चिंतित हुए। बोले कि जोरा मारा गया। जब पास पहुंचे तो जोरे ने अपना जिरह बख्तर उतार पास के नाले में लाल रंग से सने अपने हाथ धोए। महाराणा बड़े खुश हुए और चित्तौड़ की मोहर मंगरी के पास की दस बीघा जमीन दी। कितना बड़ा हौंसला, हिम्मत और साहस का काम था उनका! अपनी जान को जोखम में डालकर कितने आत्मविश्वास से जीते हैं ये लोग!

यूं तो भांड बड़ा शरीफ सज्जन और स्याणा होता है पर जब वह नागाई पर उतर आता है तब उस पर किसी का बस नहीं चलता। धुलंड़ी के दिन तो हजारी कई बार अपना मुंह काला कर नंग धड़ंग हो गधे पर सवारी कर निकले हैं। भांड शिष्ट है तब तक वह शिष्ट है पर जब वह बिगड़ा तो कोई भी हो अबै-तबै करने में देर नहीं करेगा।

अपनी खुद की भांडाई में जानकीलाल ने मुझे सुनाया कि जब वे किसी गांव जाते हैं, यह सुनाकर नेग पाते हैं- भांड आया नै गंऊंवां रा गाडा आया / भांड गया नै रामजी का भाई आया।

गाबा फाटा भांड व्या/ दाढ़ी राखी नै भांड व्या/ घरऊं बार निकल्या नै भांड व्या/ लुगाई नै दी नैं भांड व्या/ मरग्या नैं भांड व्या/ भांड मर्यों नै म्हादेवजी पैदास वै/ भांड के छोरा छोरी मर्या नैं खेड़ा-खेड़ा देवल पैदास वै/ भांड की साली मरी नै गडुरी पैदास वै/ भांड की सास मरी नै शीतलामाता पैदास वै/-----

एक मजाक और देखिए। भांड के किस-किस बात के सौगन्ध है। बड़ी बहादुरी से वे अपनी इस बात का बखान करते हैं-

भांड के घणी-घणी बात का सौगन है। हाथी पै बैठ तोरण मारै नीं/ मर्यां पछै दाग हलाणा नीं/ सोना री थाली में बैठ जीमां नीं/ जीवता साप नै खैलावां नीं/ हथेली में भाटा बांधा नीं।

जब कोई यजमान नेग देने से मना कर दे तो उसको ये छोड़ते नहीं है। अपनी तुकबंदी द्वारा हंसीमजाक में ये उसकी खाट खड़ी कर देंगे। अपनी वाचाल त्वरा बुद्धि द्वारा उसे जो आशीर्वाद देंगे उसे वह यजमान अपना नाक कटा कर, नेग देकर ऊपर से हाथ जोड़ विदाई देगा। भांडों ने ऐसे कई तीसमारखांओं तीरंदाजों का अपनी भांडाई से पानी उतारा है। देखिए कैसी लपेट देते हैं वे -

जीतो रै जजमान नैण दोई थारा फूटौ
जावै देश परदेश थनै चोर डाकू लूटौ
निकलै घर के बारणै तो बत्तीसी दांत पूरा टूटौ
जावै कदी जेल में तो जनम-जनम नीं छूटौ
थारै मकाम कै बारणै आकडा खेजड़ा उगौ
थानैं अन रो दाणो मलजो मती
घणी घणी खम्मा अन्नदाता पिरथीनाथ।

गांव में महीने-महीने भर तक भांड का पड़ाव रहता है। नित नए स्वागं लाकर सबका बड़ा रंजन होता है। यों विशेष अवसर पर स्वांग भी विशेष ही लाए जाते हैं। इनमें दशहरे पर हनुमान, शिवरात्रि पर शिव, ईद पर फकीर, होली पर नकटी, दीवाली पर सेठ का स्वांग बनाते हैं। जानकी ने बताया कि चित्तौड़ से मंगलवाड़ चौराहे तक छह सौ गांव हमारे हैं। इनमें जब भी हम जाएं, हमारा नेग तैयार है। ब्याह शादी पर हमें पहुंचना होता है पर न भी पहुंचें तो भी उसका एक रूपया तो हमारा सुरक्षित है। जब भी जाएंगे, मिल जाएगा।

जानकी ने बताया कि अब वह बात नहीं रही और भांड अपना वह पेशा भी नहीं करते हैं पर मेरे पर तो भगवान की पूरी महरबानी है। बुलावा इतना आता है कि घर पर होली-दीवाली भी नहीं रह पाता हूं। सरकार भी बहुत बुलाती है। विदेश में भी उत्सव कर आया हूं। इसी खातर बाईस बरस की बंधी-बंधाई नौकरी छोड़ दी।

केलवा के परसराम भांड ने अपने स्वांग द्वारा बड़ा नाम कमाया। उनके कई स्वांग देश-देशान्तर में

बड़े सराहे गए। अपनी वाणी द्वारा उन्होंने अपने प्रदर्शनों की अमिट छाप दी और जगह-जगह पुरस्कारों से बड़ा नाम कमाया। आजादी के बाद वे पहले कलाकार रहे जिन्होंने इस कला की पहचान राजस्थान के बाहर दूर-सुदूर दी। अपना उद्भव शंकर से मानते हुए उन्होंने बताया कि शिव विवाह में जिस प्रथम पुरुष ने अपने गाल का बाजा बजाकर उनका जो मनोरंजन किया उससे बड़ा मान पाया फिर तो उस पुरुष की विशेष जाति ही चल पड़ी जो भांडाई कर रिझाने का पेशा अपनाती रही। इस भांडाई ने उन्हें भांड बना दिया।

जानकीलाल से पहली बार चित्तौड़ में 12 अप्रेल 1980 को मिलना हुआ। उसके बाद शिल्पग्राम उत्सव तथा भारतीय लोककला मंडल के लोकानुरंजन मेले में भी उनसे अच्छी भेंट हुई। 29 दिसंबर 2005 को शिल्पग्राम में अमरावती के सुभाष भाई को ठिठुरती सर्दी में, काले लंगूर के भेष में, मुंह पर पुती कालिख, सफेद दाढ़ी, लंबी पूंछ और पूरे शरीर पर मुलतानी मिट्टी की रगड़ाई में फदकाफदकी कर दर्शकों का खासा मनोरंजन करते देखा। बाद में मिलने पर निराश ही लगे कि पांच-पांच, दस-दस रूपयों की प्रशंसनीय यह कला अब परिवार का पोषण नहीं कर सकती। ऐसी ही निराशा बांदीकुई के शमशाद ने व्यक्त की। सात वर्ष की उम्र में इस धंधे में आए उन्हें दस वर्ष हो गये। आठ भाई-बहनों में बड़ा होने से उन पर परिवार का भार है।

बहुरूपिया को विविध भेष धारण करने पर भेषिया और हर किसी की नकल लाने पर नक्काल भी कहते हैं। भेषिये मुख्यत: धार्मिक चरित्रों के भेष लाते हैं। यहीं शंकरलाल-नंदलाल भी मिले। मेकअप के लिए उनमें रंगीरी तथा उसे उतारने को उतरहट शब्द प्रचलित है।

बहुरूपियों से बात करना कई तरह की जानकारियों से रंगरसिया होना है। ढेरों पुराने और ढेरों नये किस्सों के अलावा खुद के आपबीते किस्सों की भी उसके पास भरमार है। एकबार एक सिपाही एक नक्काल को पकड़ अकबर बादशाह के पास ले गया। बादशाह ने उसे देख कहा- 'किस मनहूस को पकड़कर ले आये, पता नहीं खाना मिलेगा या नहीं। अभी ले जाओ यहां से। कल फांसी पर लटका देना।' दूसरे दिन नक्काल ने अर्ज किया- 'जहांपनाह! कल मेरी शक्ल देखने से आपको केवल खाने की फिक्र हुई किन्तु आपकी शक्ल देखने से मुझे तो फांसी का हुक्म हो गया।' यह सुन बादशाह को हंसी आ गई और उसे माफ कर दिया।

एक और मजेदार किस्सा एक ठाकुर के घर के जलसे का है जिसमें मेहमानों के लिए तो कई प्रकार के पकवान थे पर नक्कालों को रोजाना ही कढ़ी-रोटी दी गई। एक दिन एक नक्काल अपने पूरे बदन पर कढ़ाई का लेप कर मेहमानों के बीच उपस्थिति हुआ। जब उससे पूछा गया तो बोला- 'हजूर, तीन दिन से लगातार जो कढ़ी खा रहे हैं वह अब बदन से फूट-फूट कर निकल रही है।' नतीजा यह रहा कि ठाकुर ने अपनी झैंप मिटाकर नक्काल को अच्छा भोजन ही नहीं कराया, अच्छी बगसीस भी दी। लंदन और ग्लासगो नगरों में आयोजित इन्टरनेशनल फेस्टिवल ऑफ स्ट्रीट म्युजिक में भारतीय दल के जानकीलाल ने मंकी मेन के रूप में बड़ी ख्याति अर्जित की। दिल्ली में 'अपना उत्सव' समारोह में फकीर वेश में जानकीलाल को एक बारगी तो सुरक्षाकर्मियों ने प्रवेश करने से रोक दिया पर ज्योंही अपना परिचय पत्र हाजिर किया तो वे हतप्रभ रह गये।

बहुरूपियों का व्यवसाय करने वाले ब्राह्मण, मुसलमान, बावरी, भांड, नक्काल होते हैं जो अब जातिगत पहचान ही बन गई है। जयपुर, अजमेर के अलावा करनाल तथा बगदाद में भी इनकी गादियां हैं। अजमेर में उर्स के अवसर पर ये गुरु की शरण में रहते हैं। गुरु इनकी परीक्षा भी लेता है और गलत कार्यों के लिए सजा भी देता है। उनका कहना है कि पहले वर्ष में 52 सप्ताह के 52 रूप धारण करने होते थे पर अब वह बंदिश नहीं रही।

मधुर वाणी तथा अनेक बोलियों की नकल के साथ जिसका स्वांग धारण कर रहे हैं उसके समग्र हावभाव, चालढाल तथा पहचान-परख को पूरे अंग में अंगीरस करना पड़ता है। उदाहरण के लिए जलाल फकीर को वास्तविकता देने के लिए हाथ-पांवों पर चाकू-छुरे से गहरी घावदार खरोंच कर लहुलूहान होना पड़ेगा। ईंट-पत्थरों को कच्चे चनों की तरह करड़-करड़ चबा डालने की क्षमता में आना पड़ेगा। छाती पर मन-मन भर के पत्थर को बांधकर अद्दल फकीरी बतानी पड़ेगी तभी तो जो रूप और आचरण जलाल फकीर का होता है, उसके प्रति सहानुभूति, संवेदनशीलता तथा भूखे पेट को भरने का सबब उमड़ेगा।

15 माह के शिशु की सफल जटिल ओपन हार्ट सर्जरी

उदयपुर। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल, उदयपुर की हृदय शल्य चिकित्सा, हृदय रोग एवं बाल एवं शिशु विभाग की टीम ने संयुक्त प्रयासों से मात्र पांच किलो वजनी 15 माह के शिशु दीपक खटीक के हृदय में प्रत्यारोपित स्टेंट निकालकर इंट्रा कार्डियक रिपेयर सर्जरी कर नया जीवन प्रदान किया है।

छह घंटे चले इस ऑपरेशन को सफल बनाने में गीतांजली के कार्डियक थोरेसिक एवं वेसक्यूलर सर्जन डॉ संजय गांधी, कार्डियक एनेस्थेटिस्ट डॉ अंकुर गांधी, डॉ. मनमोहन जिंदल, डॉ कल्पेश मिस्त्री, डॉ आशीष पटियाल, कार्डियोलोजिस्ट डॉ कपिल भार्गव, डॉ. रमेश पटेल, डॉ. डैनी कुमार, डॉ. शलभ अग्रवाल, बाल एवं शिशु रोग विभागाध्यक्ष डॉ. देवेंद्र सरीन, नियोनेटोलोजिस्ट डॉ. धीरज दिवाकर, समस्त ओटी व आईसीयू स्टाफ का महत्वपूर्ण योगदान रहा। हृदय विशेषज्ञों का यह दावा है कि यह सर्जरी राजस्थान में अपनी तरह की प्रथम है।

डॉ रमेश पटेल ने बताया कि उदयपुर निवासी दीपक खटीक जन्म से ही ज्यादा रोने पर नीला पड़ने के साथ ही बेहोश हो जाता। आपातकालीन स्थिति में शिशु को गीतांजली हॉस्पिटल में भर्ती कर ईकोकार्डियोग्राफी एवं कैथ एंजियोग्राफी की गई जिसमें शिशु को जन्मजात हृदय रोग 'टेट्रोलोजी ऑफ फैलॉट' नामक बीमारी से पीड़ित पाया गया। इस बीमारी में हृदय में एक बड़े छेद के साथ फेफड़ों तक जाने वाली नाड़ी में रुकावट होती है। इसका इलाज सर्जरी द्वारा किया जाता है लेकिन शिशु की गंभीर हालत एवं कम वजन को देखते हुए सर्जरी का रिस्क बहुत ज्यादा था। इस कारण इस नवजात में बिना चीरे के ऑपरेशन करने का निर्णय लिया गया। नवजात की हालत को स्थिर करने के लिए एवं सफल सर्जरी करने के लिए आरवीओटी स्टेंटिंग की गई, जो कि विश्व में इस तरह के अब तक केवल 100 मामलों में की गई है। इससे उचित रक्त फेफड़ों में जाने लगा और नवजात को ऑक्सीजन मिलने लगी। इस प्रक्रिया के बाद शिशु का वजन भी धीरे-धीरे बढ़ने लगा और नीलेपन के दौरे भी कम होने लगे। स्तनपान के साथ-साथ वह अन्य खाद्य पदार्थ खाने में भी सक्षम हो पाया। तत्पश्चात् शिशु के हृदय में से स्टेंट निकालकर पूर्ण इंट्रा कार्डियक रिपेयर सर्जरी की गई।

कार्यकारी निदेशक अंकित अग्रवाल ने हृदय रोग विशेषज्ञों की टीम को बधाई देते हुए कहा कि गीतांजली हॉस्पिटल इस तरह की और नई चुनौतियों को स्वीकार करते हुए भविष्य में इनसे और कुशल तरीके से निपटने के लिए चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में नए कोर्सिज एवं ट्रेनिंग प्रोग्राम को सम्मलित करेगा जिससे उदयपुर एवं आस-पास की जनता को राजस्थान से बाहर जाने की आवश्यकता नहीं रहेगी। सीईओ प्रतीम तम्बोली ने बताया कि गीतांजली का एकमात्र उद्देश्य रोगी को बीमारी से निजात दिलाने के साथ-साथ सामान्य जीवन प्रदान करना है। गीतांजली हॉस्पिटल चिकित्सा के हर क्षेत्र में उत्कृष्ट एवं गुणात्मक चिकित्सा सेवा के साथ नवीनीकरण के प्रति प्रतिबद्ध है।

111 विद्यार्थियों को यशद सुमेधा स्कॉलरशिप

उदयपुर। हिन्दुस्तान जिंक ने अपने स्थापना दिवस पर प्रधान कार्यालय स्थित ऑडिटोरियम में यशद-सुमेधा स्कॉलरशिप वितरण कार्यक्रम आयोजित किया। जिंक

के मुख्य वित्तीय अधिकारी अमिताभ गुप्ता, चीफ आपरेटिंग ऑफिसर पकंज कुमार, चीफ टेक्नोलॉजी एण्ड इनोवेशन ऑफिसर बरून गोरेन एवं सीएसआर हेड-श्रीमती नीलिमा खेतान ने 111 विद्यार्थियों को यशद सुमेधा स्कॉलरशिप प्रदान की।

प्रारंभ में सुमेधा की सचिव रश्मि जैन ने बताया कि सुमेधा संस्था का उद्देश्य आर्थिक रूप से कमजोर परिवार के प्रतिभाशाली बच्चों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान कर उच्च शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करना है।

अमिताभ गुप्ता ने कहा कि जिंक नोबेल कॉज के लिए सदैव कटिबद्ध है और हिन्दुस्तान जिंक के स्थापना दिवस पर उन्होंने कहा कि कंपनी हजारों विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के लिए वित्तीय सहयोग देकर प्रशंसनीय कार्य कर रहा है। पंकज कुमार, बरून गोरेन एवं रामाकृष्णन काशीनाथ ने सभी विद्यार्थियों को कड़ी मेहनत, परिश्रम एवं लगन से अपने जीवन में लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम में सुमेधा की संरक्षक श्रीमती कमल मेहता, जिंक के वरिष्ठ अधिकारी कर्मचारी एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

जगुआर लैंड रोवर की बिक्री में 16 प्रतिशत की वृद्धि

उदयपुर। जगुआर लैंड रोवर इंडिया ने जनवरी से दिसंबर 2018 की अवधि में अपनी बिक्री में 16 प्रतिशत की वृद्धि की घोषणा की है। 4596 यूनिट्स की बिक्री के साथ, जगुआर लैंड रोवर इंडिया ने अपने एक कैलेंडर वर्ष में अब तक का उच्चतम वॉल्यूम रिकॉर्ड किया है। भारत में जगुआर लैंड रोवर की बिक्री में वृद्धि के लिए लैंड रोवर डिस्कवरी स्पोर्ट, रेंज रोवर इवोक, जगुआर एफपेस, एक्सई और एक्सएफजैसे मॉडलों का योगदान रहा है।

2018 में आधे से अधिक बिक्री एसयूवी द्वारा संचालित हुई है। जगुआर लैंड रोवर इंडिया लि. (जेएलआरआएल) के प्रेसिडेंट और प्रबंध निदेशक रोहित सूरी ने कहा कि ऑटो इंडस्ट्री ने 2018 में काफी विपरीत परिस्थितियों का सामना किया, विशेष रूप से दूसरी छमाही में

लिक्विडिटी की स्थितियां काफी कठिन रहीं, साथ ही अग्रिम बीमा लागत और उधार दरों में वृद्धि हुई। इसके बावजूद, भारत में जगुआर लैंड रोवर की वृद्धि हमारे लिए बहुत उत्साहजनक रही है और हम दो प्रतिष्ठित ब्रांडों, जगुआर और लैंड रोवर के लिए 2019 में बेहतरीन प्रॉडक्ट लॉन्च और हमेशा बेहतर होने वाले ग्राहक अनुभव पर ध्यान केंद्रित करना जारी रखेंगे।

वर्ष 2018 में दस से अधिक उत्पादों से संबंधित गतिविधियां देखी गईं, इनमें प्रमुख थे रेंज रोवर वेलार, रेंज रोवर इवोक कन्वर्टिबल, मॉडल ईयर 2018 रेंज रोवर और रेंज रोवर स्पोर्ट, 2.0-लीटर पेट्रोल में जगुआर एफपेस और 50 वीं एनीवर्सरी जगुआर एक्स जे 50 की पेशकश। वर्ष 2018 के अन्य मुख्य आकर्षणों में इनकंट्रोल एप्स सुइट प्रोटेक्ट के तहत एडवांस्डर कनेक्टिविटी फीचर्स का शुभारंभ, रेंज रोवर, रेंज रोवर स्पोर्ट और लैंड रोवर डिस्कवरी पर रिमोट प्रीमियम और सिक्योर ट्रैकर शामिल हैं।

जुस्टा होटल में आकर्षक ऑफर

उदयपुर। देश व दुनिया के तमाम पर्यटकों के लिए जुस्टा होटल ने आकर्षक ऑफर पेश किए है। यह ऑफर पैकेज के रूप में होटल ने सभी कमरों (डीलक्स रूम, सुपीरियर रूम, प्रीमियर रूम, सूट, विला) पर हैं। इसके अलावा पर्यटकों को भोजन और पेय पदार्थों पर भी 20 प्रतिशत तक की अतिरिक्त छूट दी जा रही है। उदयपुर का सबसे नया और सबसे रोमांचक पार्टी डेस्टिनेशन अब स्पटम् बन चुका है जुस्टा सज्जनगढ़ रिज़ॉर्ट और स्पा का एयर24, 5एन एट रूफटॉप पार्टी और स्वागत के लिए उपलब्ध है। यहां पर्यटकों को शहर के सबसे लोकप्रिय डीजे, रिकेन वाल्टर के नॉन-स्टॉप संगीत के साथ सारी जिन्दगी यादगार बने रहने वाला सज्जनगढ़ मानसून पैलेस का खूबसूरत दृश्य देखने को मिलेगा।

नारायण सेवा संस्थान में 'सिम्पोजियम सीरीज 2019' आयोजित

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान ने देश में 'सिम्पोजियम सीरीज 2019' लॉन्च किया। इस पहल के तहत संस्थान ने संयुक्त राज्य अमेरिका के आर्थोपेडिक प्रोफेशनल डॉ. नंदन शाह के सान्निध्य में संगोष्ठी आयोजित की। अध्यक्षता नारायण सेवा संस्थान के संस्थापक और चेयरमैन पद्मश्री कैलाश 'मानव' ने की।

इस अनूठी पहल के तहत, नारायण सेवा ने विभिन्न देशों में विभिन्न सहयोगों की योजना बनाई है। इसके तहत अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रौद्योगिकी के स्वास्थ्य विशेषज्ञ विशेष सत्रों में इस बारे में जानकारी देंगे कि उन्नत तकनीक और इससे संबंधित लागत में व्याप्त फासले को कैसे दूर किया जाए। संस्थान का इरादा वंचितों और दिव्यांग लोगों की जरूरत वाली स्वास्थ्य सेवाओं में एक जबरदस्त प्रभाव लाने का है।

संस्थान के अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने कहा कि एक उन्नत और बेहतर तकनीकी प्रगति वह है जो भौगोलिक या आर्थिक सीमाओं की परवाह किए बिना उन सभी लोगों के लिए सुलभ और किफायती हो, जिन्हें इसकी जरूरत है। भारत सरकार भी डब्ल्यूएचओ के दिशानिर्देशों के अनुसार स्वास्थ्य सेवाओं को सार्वभौमिक बनाने के लिए अपनी तरफ से प्रयास कर रही है और सिम्पोजियम के रूप में हमारी यह श्रृंखला भी इस वैश्विक कारण की दिषा में एक छोटा सा योगदान है।

दिल के छेद का सफल ऑपरेशन

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पीआईएमएस) उमरड़ा में

चिकित्सकों ने एक युवती के दिल में हुए 20 एमएम के छेद का सफल ऑपरेशन किया है। पीआईएमएस के चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि ऋषभदेव उदयपुर निवासी जीविका (18) के दिल में 20 एमएम का छेद था। इसकी वजह से उसे सांस लेने और धड़कन तेज रहने की तकलीफ रहती थी। इस पर परिजन उसे लेकर पीआईएमएस आए। यहां सभी जांचों के पश्चात कार्डिओलॉजिस्ट डॉ. संदीप गोलछा व एनेथेटिस्ट डॉ. राकेश भार्गव की टीम ने बिना चीर फाड़ पीडीए डिवाइस क्लोजर द्वारा युवती का सफल ऑपरेशन कर दिल का छेद बंद किया और उसे एक ही दिन में अस्पताल से छुट्टी दे दी गई।

दुबई में प्रॉपर्टी खरीदना फायदेमंद

उदयपुर। दुबई इन्वेस्टमेंट बाजार निवेशकों को अनेक अवसर प्रदान करता है, जिनके द्वारा वो ग्लोबल प्रॉपर्टी बाजार में अतुलनीय फायदे कमा सकते हैं। डेन्यूब ग्रुप के फाउंडर एवं चेयरमैन, रिज़वान साजन ने कहा कि वर्तमान में बाजार निवेशकों के पक्ष में नहीं, लेकिन तथ्य बताते हैं कि दुबई अभी भी दुनिया में सबसे आकर्षक और सुरक्षित निवेश है, जो निवेश पर 8 से 10 प्रतिशत का बेहतरीन रिटर्न देता है।

इसकी केवल बढ़ते रहने की उम्मीद है। पूर्व और पश्चिम के बीच एक सामरिक महत्व के स्थान पर स्थित दुबई, विश्वस्तरीय इन्फ्रास्ट्रक्चर एवं अन्य फायदों के साथ निवेश के केंद्र के रूप में उभरा है। यहां पर प्रॉपर्टी की कीमतें अभी भी कम हैं। दुबई को न्यूयार्क एवं मिडिल ईस्ट का न्यूयार्क कहा जा सकता है।

यहां पर बेहतरीन स्थान एवं किफायती मूल्य पेश करते हुए हाई-एण्ड लेज़र और बिज़नेस सुविधाएं मिलती हैं। मुंबई या नई दिल्ली के मुकाबले दुबई में कुछ मुख्य स्थानों पर प्रॉपटी की कीमते अपेक्षाकृत कम हैं। रिज़वान साजन ने कहा कि निवेश अब भौगोलिक सीमाओं तक सीमित नहीं रह गए हैं। लोग विकसित अर्थव्यवस्थाओं की ओर देख रहे हैं और अच्छे रिटर्न हासिल करने के लिए उन शहरों में निवेश कर रहे हैं।

राजन 'श्री कन्हैयालाल नन्दन सम्मान' से समादृत

दुष्यंत कुमार स्मृति पांडुलिपि संग्रहालय, भोपाल द्वारा आकोला (राजस्थान) के साहित्यकार राजकुमार जैन 'राजन' को बाल साहित्य सृजन, सम्पादन, उन्नयन एवम हिन्दी भाषा के देश विदेश में प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में महनीय कार्य के लिए 'कन्हैयालाल नन्दन सम्मान' से समादृत किया गया। सम्मान प्रदाता शशांक, राजुरकर राज, पंकज सुबीर एवं डॉ नीलम कपूर थे। **-आयुश्री मोरे**

सक्का का टी-सेट जीनियस बुक में दर्ज

प्रसिद्ध स्वर्ण शिल्पकार इकबाल सक्का द्वारा निर्मित विश्व का सबसे छोटा टी-सेट जीनियस बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज हुआ है। सोने से निर्मित 2 मिमी आकार के टी-सेट की केटली, 1-1 मिमी के शुगर पॉट, मिल्क पॉट, चम्मच, कप और 2 मिमी आकार की प्लेट बनाई है। इसे जीनियस बुक के अध्यक्ष डॉ. माईक ने सबसे छोटी सोने की टी-सेट होने का प्रमाण पत्र, गोल्ड मेडल, ट्रॉफी और बैंच यूएसए कार्यालय से जारी किया है।

वीआरजी एनर्जी को मिला उद्यमी पुरुस्कार

उदयपुर। भारत सरकार के कौशल विकास मंत्रालय द्वारा पूरे देश में संस्कृति को प्रोत्साहित करने के लिए राष्ट्रीय उद्यमिता पुरुस्कार की शुरुआत की गई। वर्ष 2018 में इन पुरुस्कारों को प्रदान करने के लिए 4 जनवरी 2019 को अम्बेडकर अंतरराष्ट्रीय भवन नई दिल्ली में समारोह का आयोजन किया गया।

इस समारोह में सुरेश प्रभु, केन्द्रीय वाणिज्य और उड्डयन मंत्री और अनंतकुमार हेगड़े, कौशल विकास और उद्यमिता राज्य मंत्री उपस्थित थे। इन पुरुस्कारों के लिए व्यक्तियों और संगठनों का चयन सात विभिन्न चरणों में किया गया। इन पुरुस्कारों के विभिन्न श्रेणियों में भारत भर के तकरीबन 6000 आवेदन आये थे। वीआरजी को यह पुरुस्कार अक्षय ऊर्जा एवं अपविष्ट श्रेणी में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए मिला। वर्ष 2011 में विजय राठोड़, रितेश कमानी, घनश्याम कपूरिया ने राजकोट में वीआरजी एनर्जी इंडिया प्राइवेट लि. की स्थापना कर अक्षय ऊर्जा पर आधारित समाधान पर ध्यान केंद्रित किया। वीआरजी ने अपने तकनीकी क्षमताओं को प्राप्त किया एवं स्वयं के अनुसंधान और विकास से अपने स्वदेशी एसी सोलर पम्प कंट्रोलर का निर्माण किया, जिससे उत्पादों की क्षमता सेवा में सुधार हुआ और देश के भीतर रोजगार पैदा हुआ। इन वीआरजी उत्पादों का उपयोग करके किसान पहले की अपेक्षा एक फसल प्रति वर्ष से अब प्रति वर्ष तकरीबन तीन फसल लेने में सक्षम हैं, जिससे किसान अपनी आय को दुगना करेन में सक्षम हुए। वीआरजी ने करीब 9000 किसानों को लाभान्वित किया है। 9 लाख रुपये के आंतरिक पूंजी निवेश के साथ, उनका टर्न-ओवर में 2011 में 42 लाख रुपये से बढ़कर 2017-18 में 34 करोड़ रुपये हो गया। कंपनी का लक्ष्य 2036 तक 6500 करोड़ के टर्न-ओवर को प्रप्त करना है।

नंद बाबू के पास थे संवेदनाओं के पंख

नंद चतुर्वेदी के काव्य में संवेदनाओं के पंख थे जिससे उन्होंने संपूर्ण समाज को संस्कारित किया। ये विचार डॉ. गिरिजा व्यास ने प्रसंग संस्थान द्वारा आयोजित उनकी चौथी पुण्यतिथि पर व्यक्त किये। उन्होंने कहा-

खंजर को लगे जान से गुज़रने नहीं देगा।
वह शख़्स मुझे चैन से मरने नहीं देगा।।

अध्यक्षता करते किशन दाधीच ने यह गीत पढ़ा-

मुझको डर था तुम जाओगे,
एक दिवस सबके मन बसिया।
नंद तुम्हारे बिन गाएंगे
फिर कैसे हम होली रसिया।।

आयोजन में डॉ. इन्द्रा जैन, डॉ. मंजु त्रिपाठी, डॉ. चन्द्रकांता बंसल, डॉ. रजनी कुलश्रेष्ठ, डॉ. अरूण चतुर्वेदी, डॉ. निर्मल गर्ग, डॉ. प्रीता भार्गव, डॉ. जयप्रकाश पंड्या 'ज्योतिपुंज', डॉ. सर्वतुन्निसा खान, डॉ. मुश्ताक चंचल, डॉ. मंजु चतुर्वेदी, डॉ. माधव हाड़ा ने नंदजी के काव्य में समय बोध को विशेष रूप से रेखांकित किया जो प्रायः कम कवियों में दिखाई देता है। डॉ. हरिराम मीणा ने कविता प्रस्तुत की। आयोजन में नेहा राव, श्रेणीदान चारण, एस.पी. बठवाल, शकुंतला सोनी, आदर्श चतुर्वेदी ने भाग लिया।

-डॉ. इन्द्रप्रकाश श्रीमाली

डॉ. भानावत सम्मानित

नये वर्ष एक जनवरी 2019 को कोलकाता में कन्हैयालाल सेठिया तथा उदयपुर में कोमल कोठारी पुरस्कार प्राप्त करने पर भरतप्रकाश-प्रियाप्रकाश सिसोदिया दम्पती द्वारा डॉ. महेन्द्र भानावत का सम्मान। साथ में प्रख्यात नृत्य निर्देशिका डॉ. शकुंतला पंवार और उनकी शिष्या भवाई कलाकार छह वर्षीय हीर सिसोदिया।

पुरी दंपती बने 'आपकी खूबसूरती उनकी नज़र से- सीज़न 2' के विजेता

उदयपुर। वीनस क्रीम बार द्वारा आयोजित वीनस क्रीम बार 'आपकी खूबसूरती उनकी नज़र से : सीज़न 2' के ग्राण्ड फिनाले के विजेता मंदीप सिंग पुरी और श्रीमती अश्मितकौर पुरी विजेता बने। आरएसपीएल लि. के प्रेसीडेन्ट एस. के. बाजपेयी ने कहा कि विजेता को स्विट्ज़रलैण्ड की यादगार ट्रिप का मौका मिलेगा। प्रथम रनरअप राहुल-फागुन रायज़ादा को सिंगापुर, दूसरे रनरअप अविनाश-डॉ. सोनल रजानी को बाली की यादगार ट्रिप का मौका मिलेगा। कार्यक्रम की मेजबानी अभिनेता जय भानुशाली तथा अभिनेत्री माही विज ने की। जूरी में अभिनेता और मॉडल- रजनीश दुग्गल, अभिनेत्री- दीपिका सिंह, गायिका मिस वंदना वधेरा, मॉडल- प्रतीक जैन, फोटोग्राफर- सुश्मेन्द्रा दुब तथा आरजे सायेमा शामिल थे। ग्राण्ड फिनाले में तीन राउण्ड्स में 18 फाइनलिस्ट्स ने हिस्सा लिया- वेडिंग्स ऑफ इण्डिया, गुफ्तगु एक दूसरे से और बातें जजेज़ से के ज़रिए ये जानने की कोशिश की गई कि ये जोड़े एक दूसरे को कितनी अच्छी तरह से जानते हैं। इसके बाद जजेज़ के साथ क्विशन एण्ड आंसर राउण्ड का आयोजन किया गया।

जिंक़ राष्ट्रीय आंगनवाड़ी अवार्ड से सम्मानित

उदयपुर। हिन्दुस्तान जिंक़ को भारत सरकार के महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने बाल विकास के क्षेत्र में उत्कृष्ट उपलब्धि हेतु राष्ट्रीय आंगनवाड़ी कार्यकर्त्री पुरस्कार 2017-18 से पुरस्कृत किया गया।

उदयपुर के तिलखेड़ा नंदघर की रुकमणी भोई तथा नयाखेड़ा आंगनवाड़ी केन्द्र की विमला कुंवर को केन्द्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती मेनका गांधी ने सम्मानित किया। इस अवसर पर भारत सरकार के महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के राज्यमंत्री डॉ. वीरेन्द्र कुमार भी उपस्थिति थे। इस उत्कृष्ट उपलब्धि के लिए 2017-18 में कुल 97 आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया गया है।

यह पुरस्कार आईसीडीएस योजना के तहत बाल विकास से संबंधित क्षेत्रों में आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को प्रेरित करने एवं उनकी अनुकरणीय सेवाओं के लिए प्रदान किया गया है। राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कार में 50,000 रुपये नकद एवं प्रशस्ति-पत्र तथा राज्य स्तर पर पुरस्कार में 10,000 रुपये नकद एवं प्रशस्ति-पत्र शामिल है।

कुटल खान की मास्टर क्लास 18 को

उदयपुर। जुस्टा सज्जनगढ़ के रूफटॉप रेस्टोरेंट में आगामी 18 जनवरी को सायं 7 बजे राजस्थान के प्रसिद्ध लोककलाकार कुटल खान एक मास्टर क्लास का आयोजन करेंगे, जहां वे 'रंक से लेकर राजा बनने तक' के अपने सफर के अनुभवों को साझा करेंगे। इस दो घंटे के कार्यक्रम में कुटल खान अपने संघर्षों के बारे में बतायेंगे कि उनको एक सामान्य आदमी से शुरू करके सफलता की ऊंचाइयों तक पहुंचने और अंतर्राष्ट्रीय पहचान हासिल करने में क्या-क्या संघर्ष करना पड़ा। कार्यक्रम का आयोजन जुस्टा सज्जनगढ़ के रूफटॉप रेस्टोरेंट और बार, एयर 24.5 एन, में होगा। यह शानदार कार्यक्रम स्थल राजस्थानी लोक संगीत के लिए एकदम सही जगह है क्योंकि यहां से भव्य मानसून पैलेस दिखाई देता है। कार्यक्रम में कुटल खान अपना दमदार परफॉरमेंस प्रस्तुत करेंगे। अंत में दर्शकों के साथ कुटल खान की बातचीत होगी। कार्यक्रम में प्रवेश के लिए कोई शुल्क नहीं है।

डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की करीब 100 पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से बहुत अप्राप्य हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित अभिनंदन ग्रंथ 'लोक मनस्वी' प्रकाशन प्रक्रिया में है। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं-

पुस्तक का नाम	मूल्य
भारतीय लोकनाट्य	1500/
परंपरा का लोक	475/
आदिवासी लोक	350/-
जनजाति जीवन और संस्कृति	295/-
महाराष्ट्र के लोकनृत्य	200/-
आदिवासी जीवनधारा	395/-
जनजातियों के धार्मिक सरोकार	150/-
राजस्थान के लोकनृत्य	200/-
गुजरात के लोकनृत्य	200/-
राजस्थान के लोक देवी देवता-	150/-
भारतीय लोकमाध्यम	75/-
अजूबा भारत	200/-
पाबूजी की पड़	50/-
लोककलाओं का आजादीकरण	250/-
उदयपुर के आदिवासी	250/-
निर्भय मीरां	250/-
रंग रूड़ो राजस्थान	100/-
कुंवारे देश के आदिवासी	100/-
जन्हें मैं जानता हूं	100/-
जैन लोक का पारदर्शी मन	150/
गवरी	60/

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें

संरक्षक	**11000/**
विशिष्ट सदस्य	**5000/**
आजीवन सदस्य	**3000/**
शब्दरंजन के सहयात्री	**1000/**
साहित्यिक चौपाल	**500/**
वार्षिक संस्थागत	**300/**
वार्षिक व्यक्तिगत	**250/**

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

(**Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

कृपया रचनाएं व समाचार ई-मेल से भेजें तो सुविधाजनक शीघ्र प्राप्त होंगी।

shabdranjanudr@gmail.com

इस देश ने मुझे बहुत प्यार दिया यही मेरी पोजिटिविटी है : नेहा कक्कड़

इम्पीरियल ब्लू सुपरहिट नाइट्स में पावरहाऊस परफॉर्मर नेहा कक्कड़ के तरानों पर झूमे उदयपुरराइट्स

-डॉ. तुक्तक भानावत-

उदयपुर। देश में भले ही असहिष्णुता की कितनी भी बातें की जाती हो, इस देश ने मुझे बहुत प्यार दिया और मैं इंडिया छोड़ कर कहीं नहीं जा सकती हूं। यह बात भारत की सबसे पसंदीदा युवा म्यूजिकल आइकन, सिंगिंग सुपरस्टार नेहा कक्कड़ ने कहीं। वे इम्पीरियल ब्लू सुपरहिट नाइट्स के पांचवे सीजन से पूर्व आयोजित प्रेसवार्ता में बोल रही थीं।

उन्होंने कहा कि उनके लिए संगीत सबसे पहले है और राजनीति से बिल्कुल भी अपडेट नहीं है। वह इंटरटेंटमेंट से खुश है। इस देश के लोग उन्हें इतना प्यार देते हैं, वही उनकी ताकत है। नेहा ने कहा कि अच्छा कलाकार वही होता है जो लोगों को पसंद आए जिनके लिए वह दिल से गाती है। लोग उनके गाने सुनकर खुश रहते हैं। जो उन्हें अच्छा परफोर्म करने के लिए ऊर्जा देता है।

नेहा ने कहा कि सभी को अपने परिवार और परिजनों को गर्व की अनुभूति कराना चाहिए। जिसे वह बखूबी निभाती है। उन्हें बहुत अच्छा लगता है जब उनकी खुशी के लिए लोग प्रार्थना करते हैं जो उन्हें प्रेरणा देता है। नई पीढ़ी के लिए नेहा ने कहा कि किसी भी तरह से लोगों की आत्मविश्वास कम करने की कोशिश को नकारते हुए अपने टेलेंट को कड़ी मेहनत से संवारना चाहिए। आज के समय में लड़का ओर लड़की सब बराबर हैं। खुद में नकारात्मकता नहीं आने दे तो सफलता जरूर मिलेगी।

पर्नोड रिकार्ड इंडिया के चीफ मार्केटिंग ऑफिसर, कार्तिक मोहिंदर ने कहा कि इम्पीरियल ब्लू सुपरहिट नाइट्स के पांचवे सीजन की शुरूआत नेहा कक्कड़ के साथ लखनऊ से हुई थी। गुवाहाटी और मैंगलोर की यात्रा के बाद उदयपुर में नेहा कक्कड़ ने रोमांचक धुनों पर शानदार प्रस्तुति दी। इसके बाद इम्पीरियल ब्लू सुपरहिट नाइट्स का पांचवां सीजन इंदौर पहुंचेगा और 2 फरवरी 2019 को भुवनेश्वर में इसका समापन होगा।

कार्तिक मोहिंदर ने कहा कि उदयपुर के कार्यक्रम में नेहा कक्कड़ ने 'आंख मारे', 'निकले करंट', 'दिलबर', 'काला चश्मा', 'ला ला ला', और 'लंदन ठुमकदा' जैसे गानों पर प्रस्तुति देकर श्रोताओं को रस विभोर कर दिया।

संगीत की मधुर धुनों पर डीजे सुकेतु ने रीमिक्स पर अपनी प्रस्तुति से इम्पीरियल ब्लू सुपरहिट नाइट्स को यादगार बना दिया। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ।

बन सको तो जीरो अर्थात् बिन्दु अर्थात् शून्य बनो

-दिनेश सहगल-

विश्व की सारी चीजें जीरो के इर्द-गिर्द घूमती हैं। एक सामान्य बात से लेकर विशेष बात तक जीरो ही है। अंक गणित में जीरो से भी छोटा एक दशमलव है जिसे हम बिन्दु कहते हैं। ब्रह्माण्ड में जितनी सारी घटनाएं घटित होती हैं उन सबकी शुरूआत बिन्दु या बीज से होती है। जब हम कोई बात करते हैं तब उसका कोई सार नहीं निकलने पर कहते हैं, इस बात पर फुलस्टॉप लगाओ। बहुत बड़े वृक्ष का स्वरूप एक छोटे से बीज में समाहित होता है। एक के दाँयी तरफ बिन्दी लगा दी जाय तो उसका महत्व बढ़ जाता है। एक बिन्दी से दस गुना अंक बढ़ जाता है। दस से सौ और सौ से हजार बन जाता है।

सबको पता है कि आत्मा का स्वरूप बिन्दी है। प्वाइंट ऑफ लाईट तथा प्वाइंट ऑफ एनर्जी है। आत्मा ऊर्जा ही तो है। जब कभी स्कूल में छोटे बच्चों को गिनती सिखाई जाती है तो उनको एक, दो, तीन बनाना मुश्किल होता है, लेकिन अगर जीरो या बिन्दी लिखने के लिए कहा जाय तो तुरंत लिखते हैं। कहीं भी पेंसिल पड़ जाय तो बिन्दी सहज रूप से बन जाती है। बिन्दी कितनी सहज है। लिखना भी सहज। बोलना भी सहज और कहना भी सहज। अब इतनी सहज-सी बात है बिन्दी, लेकिन इस सहज बात को स्वीकार करना इतना मुश्किल क्यों?

परमात्मा आ करके हमें सारे ज्ञान का सार बिन्दु बनना ही तो सिखाते हैं। जब भी हम किसी चित्र को देखते हैं, चाहे राम का हो, कृष्ण का हो या किसी भी देवी-देवता का हो, उसे देखते ही हमारे मन दो बातें याद आती हैं- उनका गुण और अवगुण। राम के बारे में लोग कहते हैं कि राम बड़े अच्छे थे लेकिन उन्होंने सीता को घर से बाहर निकाल दिया। इसी तरह कृष्ण बड़े अच्छे थे लेकिन वे राजनीति खेलते थे जबकि वास्तविकता ऐसी नहीं है। ऐसे ही जब हम किसी इंसान को देखते हैं तो उसके अंदर भी गुण-अवगुण देखने लग जाते हैं। इसलिए परमात्मा ने हमें सहज रास्ता बताया कि तुम शरीर को भूल जाओ, बिन्दु को देखो। बिन्दु बनो और बिन्दु में ही सारा सार तत्व है।

यदि आपके सामने बिन्दु या जीरो लिख दिया तो आप उसमें जरा बुराई निकालकर दिखाओ। अगर बिन्दु की परिभाषा दी जाये तो कह सकते हैं कि जिसके अंदर न तो लम्बाई पाई जाये, न चौड़ाई। न ऊंचाई पाई जाये और न गहराई। इसलिए बिन्दु में से आप अवशिष्ट या कुछ भी बचा हुआ नहीं निकाल सकते। यह अपने आप में संपूर्ण है। इसलिए परमात्मा का रूप भी बिन्दु है जो देह और देह की दुनिया से परे है। इसीलिए वह शक्तिशाली है क्योंकि वह विस्तार में नहीं जाता। जहाँ विस्तार है वहाँ ऊर्जा का नाश अवश्य होता है। इसलिए कोई भी आकार या बहुत इधर-उधर की बातों में जब जाते हैं तो बुद्धि उलझ जाती है। इससे अनेक प्रकार के प्रश्न पैदा हो जाते हैं।

परमात्मा ने हमको बहुत सहज रास्ता बताया कि बिन्दु अर्थात् जीरो अर्थात् शून्य कमाल का शब्द है। इसमें जीवन का सार है जो व्यक्ति आत्म-स्वरूप अर्थात् जीरो में रहता है, लोग उसे उतना सम्मान देते हैं। जो लोग ज्यादा बोलते हैं वो झूठ ही बोलते हैं। सच तो एक लाइन में ही पूरा हो जाता है।

इसलिए सच्चाई बिन्दी है क्योंकि संपूर्ण है। पूरे ब्रह्माण्ड में जो विस्तार है या यूँ कहें कि हमारी धरती पर जो कुछ भी आपको नजर आता है, उसके लिए भी दुनिया के लोग कहते हैं कि सब-कुछ खाक में मिल जायेगा, जीरो बन जायेगा। इसलिए जीरो बनो! सबको जीरो बनाओ तथा विस्तार रूपी अहम् को नष्ट करो।

डीजे सुकेतु के साथ उदयपुर पहुँची ब्लेंडर्स प्राइड मैजिकल नाइट्स

उदयपुर। ब्लेंडर्स प्राइड मैजिकल नाइट्स स्टाइल पार्टीज झीलों के शहर में पहुँची, भारत के शीर्ष डीजे सुकेतु ने उदयपुर के होटल जुत्सा सज्जनगढ़ में अपने नए संगीत से प्रशंसकों को खूब लुभाया। कमर्शियल पॉप के साथ बॉलिवुड के मिश्रण से डीजे सुकेतु ने अपने करिश्मा संगीत और ऊर्जा के साथ एक जादुई माहौल बनाया, जिसने प्रशसंकों को इतना मंत्रमुग्ध किया कि वे और अधिक की मांग कर रहे थे। इस शाम ने असाधारण अवधारणा 'प्राइड' के जरिये स्वयं का और व्यक्ति का जश्न मनाया।

परनोड रिकार्ड इंडिया के सहायक उपाध्यक्ष राजा बनर्जी ने कहा कि आज के उपभोक्ताओं के लिए, उनकी एक अनूठी शैली है और उसी को व्यक्त करना जरूरी है। यह प्रत्येक व्यक्ति की क्षमता है कि वह अपनी विशिष्ट पहचान बनाए और प्रमाणिकता के लिए प्रयास करे, जो रूढ़ियों को तोड़ता है। ब्लेंडर्स प्राइड मैजिकल नाइट्स स्टाइल पार्टीज संगीत और शैली के इलेक्ट्रिक मिश्रण के जरिये इसे जीवंत करता है। यह उपभोक्ताओं को निरंतर पहले न देखा गया और रोमाचंक अनुभव प्रदान करता है।

डीजे सुकेतु ने कहा कि संगीत के पीछे एक प्रेरणा है, इसके जरिये मैं युवाओं के बीच यह बात पहुंचाता हूं कि संगीत की शक्ति हमें जोड़ना, साझा करना और सबसे महत्व्वपूर्ण, जीवन का आनंद लेना और कृतज्ञता से भरपूर बनना सिखाती है। मेरा संगीत सदाबहार बॉलिवुड शैलियों की समझ से आता है और इसें नए युग के संगीत/टेक्नोलॉजी के साथ मिश्रित किया जाता है। मेरा मिश्रण बहुत जैविक है और संगीत मेरे लिए सबकुछ है। ब्लेंडर्स प्राइड मैजिकल नाइट्स स्टाइल पार्टीज के साथ मैं अपने स्टाइल स्क्वायड की तलाश करूंगा- संगीत प्रेमी, जो शहर के उबर स्टाइलिश लोग हैं और अपने जुनून का जश्न गर्व के साथ मनाना पसंद करते हैं।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।